हिन्दी पाक्षिक

सेमन्या कणवघाटी

RNI No.: UTTHIN/2013/54659

वर्ष-13 अंक-12 हरिद्वार, शुक्रवार, 01 मई, 2026 मूल्य-दो रूपया मात्र पृष्ठ-8

वैदिक मंत्रोच्चार के साथ खुले भगवान बद्रीनाथ के कपाट, आस्था और उल्लास से गूंजा धाम

चमोली,संवाददाता । भगवान बद्रीनाथ के कपाट गुरुवार प्रातः 6 बजकर 15 मिनट पर विधिविधान एवं वैदिक मंत्रोच्चार के साथ ग्रीष्मकाल हेतु श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ खोल दिए गए। कपाट खुलते ही पूरा बद्रीनाथ धाम भक्ति और श्रद्धा के भाव से सराबोर हो उठा। इस पावन अवसर पर देश-विदेश से पहुंचे लगभग 15 हजार श्रद्धालुओं ने भगवान बद्री विशाल एवं अखंड ज्योति के दर्शन कर पुण्य लाभ अर्जित किया। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कपाट उद्घाटन के शुभ अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम से पहली महाभिषेक पूजा संपन्न कर देश एवं प्रदेश की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने मंदिर परिसर स्थित लक्ष्मी मंदिर, गणेश मंदिर तथा आदि गुरु शंकराचार्य गद्दी सहित अन्य मंदिरों में विधिवत पूजा-अर्चना की। मुख्यमंत्री ने धाम पहुंचे तीर्थयात्रियों का आत्मीय स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए यात्रा व्यवस्थाओं का फीडबैक भी लिया।

उन्होंने कहा कि चारधाम यात्रा को सुरक्षित, सुगम एवं सुव्यवस्थित बनाने के लिए राज्य सरकार द्वारा व्यापक स्तर पर तैयारियां की गई हैं। श्रद्धालुओं की सुविधा, सुरक्षा और बेहतर अनुभव सुनिश्चित करने हेतु हर स्तर पर व्यवस्थाओं को सुदृढ़ किया गया है।

मुख्यमंत्री ने देश विदेश से आने वाले सभी श्रद्धालुओं से हरित एवं स्वच्छ चारधाम यात्रा में सहयोग करने का आह्वान करते हुए पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया। चारधाम यात्रा के शुभारंभ के साथ ही बद्रीनाथ धाम में आस्था, परंपरा और सुव्यवस्थित व्यवस्थाओं का अद्भुत संगम देखने को मिला, जो श्रद्धालुओं के लिए एक दिव्य और यादगार अनुभव बनेगा।

लोक संस्कृति की झलक: जागरों पर झूम उठा बद्रीनाथ धाम: कपाट खुलने के इस ऐतिहासिक अवसर पर माणा एवं बामणी गांव की महिलाओं ने पारंपरिक जागरों के साथ मंदिर प्रांगण में झुमैलो नृत्य प्रस्तुत किया, जिससे संपूर्ण वातावरण लोक संस्कृति और आस्था के रंग में रंग गया। वहीं देश के विभिन्न हिस्सों से आए श्रद्धालुओं ने भी भजन-कीर्तन कर अपनी श्रद्धा अर्पित की।

भंडारे का शुभारंभ, श्रद्धालुओं के साथ किया प्रसाद ग्रहण: मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने धाम में संचालित भंडारे का रिबन काटकर शुभारंभ किया तथा श्रद्धालुओं के साथ प्रसाद ग्रहण किया। उन्होंने भंडारा संचालकों से संवाद कर व्यवस्थाओं की जानकारी ली और मानव सेवा ईश्वर सेवा उत्थान समिति द्वारा संचालित विशाल भंडारे की सराहना की। इस अवसर पर जिलाधिकारी गौरव कुमार, पुलिस अधीक्षक सुरजीत सिंह पंवार, बीकेटीसी के सीईओ विशाल मिश्रा, उपाध्यक्ष ऋषि प्रसाद सती, रावल अमरनाथ नंबूदरी, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी गिरीश चौहान, मंदिर अधिकारी राजेंद्र चौहान, नायब रावल सूर्यराग नंबूदरी, धर्माधिकारी स्वयंबर सेमवाल, वेदपाठी रविंद्र भट्ट, आचार्य वाणी विलास डिमरी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

अवैध मजार पर चला प्रशासन का बुलडोजर

हरिद्वार,संवाददाता । सरकारी भूमि पर अवैध कब्जा कर बनाई गई अवैध मजार को प्रशासन ने ध्वस्त कर दिया। ध्वस्तीकरण की कार्रवाई के बाद मजार के नीचे किसी भी प्रकार के अवशेष नहीं मिले है। प्रशासन ने पूर्व में मजार के खादिमों को नोटिस देकर जवाब मांगा था, जिसके बाद यह कार्रवाई की गई है। मिली जानकारी के अनुसार गढ़मीरपुर गांव के पास सुमननगर क्षेत्र हैं,जहां बरसाती नदी के किनारे पूर्व में टिहरी विस्थापित पुनर्वास के पट्टे आवंटित किए गए थे, लेकिन फिर कुछ लोगों ने यहां एक मजार बनाकर करीब दस बीघा भूमि पर कब्जा कर लिया गया। कब्जे के बाद कई लोगों ने प्रशासन को शिकायत दी और अतिक्रमण हटाकर सरकारी भूमि को कब्जा मुक्त करने की मांग की। इसके बाद प्रशासन ने मामले की जांच की और कब्जेधारियों को नोटिस जारी कर मजार से संबंधित दस्तावेज मांगे। तय समय पर नोटिस का जवाब न मिलने पर प्रशासन की टीम ने कार्रवाई की तैयारी की. बुधवार सुबह हरिद्वार के एसडीएम जितेंद्र कुमार के नेतृत्व में टीम मौके पर पहुंची और मजार को हटाने की कार्रवाई शुरू की। बुलडोजर की मदद से कुछ ही घंटों में पूरे स्ट्रक्चर को ध्वस्त कर दिया गया। सुरक्षा की दृष्टि से मौके पर भारी पुलिस बल तैनात रहा। बुलडोजर से पूरी मजार को ध्वस्त कर दिया गया। बताया जा रहा है कार्रवाई के बाद खादिम अपना सामान लेकर चले गए। हरिद्वार के डीएम मयूर दीक्षित ने बताया कि हरिद्वार में सरकारी भूमि किए गए सभी प्रकार के अतिक्रमण हटाए जाने की कार्रवाई की जा रही है। जनपद में कही भी अवैध अतिक्रमण बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। आगे भी अवैध अतिक्रमण के खिलाफ कार्रवाई जारी रहेगी।

फाउंड्री गेट के पास युवकों पर हमला, फायरिंग में एक घायल

हरिद्वार । रानीपुर क्षेत्र स्थित फाउंड्री गेट के पास मंगलवार देर रात ड्यूटी पर जा रहे दो युवकों पर हथियारबंद युवकों ने हमला कर दिया। आरोप है कि हमलावरों ने मारपीट के साथ फायरिंग भी की, जिसमें एक युवक के हाथ में गोली लग गई। घायल को गंभीर हालत में एम्स ऋषिकेश रेफर किया गया है। पुलिस ने नौ नामजद और एक अज्ञात आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है, जबकि एक युवक को हिरासत में लिया गया है। ज्वालापुर के आर्यनगर निवासी हन्नी ने तहरीर देकर बताया कि वह 21 अप्रैल की रात दोस्त वंशु के साथ स्कूटी से सिडकुल स्थित कंपनी में ड्यूटी पर जा रहे थे। रात करीब 10:30 बजे फाउंड्री गेट के पास उन्हें नोमान कुरैशी, सत्यम, वेदांत, उमर गुर्जर, अनमोल बक्शी, नितिश, मुकुल, फरहान, भानु प्रताप गोयल समेत अन्य युवक मिल गए। आरोप है कि उनके हाथों में तमंचे, चाकू और लाठियां थीं। हन्नी का आरोप है कि सभी आरोपियों ने दोनों को रोककर गाली-गलौज करते हुए मारपीट शुरू कर दी। इसी दौरान सत्यम और उसके साथियों ने तमंचों से फायरिंग कर दी। जान बचाकर भागने के दौरान चली एक गोली वंशु के दाहिने हाथ में लग गई। शोर-शराबा और वाहनों की रोशनी देख हमलावर मौके से फरार हो गए। इसके बाद वंशु के परिजनों को दी और घायल को जिला अस्पताल पहुंचाया गया, जहां से उसकी गंभीर हालत को देखते हुए एम्स ऋषिकेश रेफर कर दिया गया।

एम्स ऋषिकेश के छठे दीक्षांत समारोह को उपराष्ट्रपति ने किया संबोधित

देहरादून,संवाददाता । भारत के उपराष्ट्रपति सी. पी. राधाकृष्णन ने आज ऋषिकेश स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के छठे दीक्षांत समारोह को संबोधित किया। ऋषिकेश को चिंतन और उपचार का वैश्विक केंद्र होने के साथ-साथ हिमालय का प्रवेश द्वार के रूप में आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व देते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि ऐसा वातावरण दीक्षांत समारोह की गंभीरता को और भी गहरा कर देता है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि दीक्षांत समारोह न केवल वर्षों के अनुशासित प्रयासों और त्याग की परिणति है, बल्कि समाज और राष्ट्र के प्रति एक बड़ी जिम्मेदारी की शुरुआत भी है। उन्होंने स्नातकों से समर्पण और उद्देश्य की भावना के साथ अपने पेशेवर कर्तव्यों को निभाने का आग्रह किया।

कोविड-19 महामारी से उत्पन्न चुनौतियों पर विचार करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने सतत नवाचार और प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया है। उन्होंने भारत के व्यापक टीकाकरण अभियान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 14 करोड़ से अधिक नागरिकों को मुफ्त टीके लगाए गए, जिससे स्वास्थ्य सेवा तक समान पहुंच सुनिश्चित हुई। उन्होंने कहा कि भारतीय वैज्ञानिकों ने लाभ के लिए नहीं, बल्कि मानवता के कल्याण के लिए टीके विकसित किए हैं।

उपराष्ट्रपति ने भारत की वैक्सीन मैत्री पहल के माध्यम से वैश्विक जिम्मेदारी को भी रेखांकित किया, जिसके तहत 100 से अधिक देशों को टीके उपलब्ध कराए गए। उन्होंने कहा कि यह पहल ''वसुधैव कुटुंबकम'' की भावना को दर्शाती है और एक दयालु और जिम्मेदार वैश्विक भागीदार के रूप में भारत की भूमिका को मजबूत करती है। स्वास्थ्य सेवा अवसंरचना के विस्तार पर प्रकाश डालते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि पिछले एक दशक में देश भर में स्थापित नए एम्स संस्थानों ने गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा और चिकित्सा शिक्षा तक पहुंच को मजबूत किया है, उन्होंने कहा कि सुशासन लोगों की जरूरतों को समझने और उनकी सेवा करने में निहित है। एम्स ऋषिकेश की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि यह संस्थान नैदानिक देखभाल, शैक्षणिक क्षमता, अनुसंधान, नवाचार और सामाजिक प्रतिबद्धता के क्षेत्र में उत्कृष्टता का एक आदर्श प्रस्तुत कर रहा है। उन्होंने विशेष रूप से टेलीमेडिसिन पहलों की सराहना करते हुए कहा कि स्वास्थ्य सेवा को अस्पताल परिसरों से आगे बढ़कर दूरस्थ और कम सुविधा प्राप्त आबादी तक पहुंचना चाहिए। उपराष्ट्रपति ने हेली एम्बुलेंस सेवाओं और चार धाम यात्रा के दौरान तथा दूरस्थ क्षेत्रों में दवा वितरण के लिए ड्रोन के उपयोग जैसी नवोन्मेषी स्वास्थ्य सेवाओं की भी प्रशंसा की और इन्हें स्वास्थ्य सेवा वितरण में लंबे समय से चली आ रही चुनौतियों का प्रभावी समाधान बताया। उपराष्ट्रपति ने दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे सहित क्षेत्र में अवसंरचना के तीव्र विकास पर प्रकाश डाला। उन्होंने समावेशी विकास को बढ़ावा देने, बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच में सुधार लाने के लिए मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में उत्तराखंड सरकार के प्रयासों की सराहना की। उपराष्ट्रपति ने इस बात पर जोर दिया कि स्वास्थ्य सेवा एक सार्वजनिक जिम्मेदारी है और राष्ट्र निर्माण में चिकित्सा पेशेवरों की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने डिग्री प्राप्त करने वाले डॉक्टरों से निवारक देखभाल, ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंच, अनुसंधान और नवाचार के माध्यम से योगदान देने और सहानुभूति, ईमानदारी और सेवा के मूल्यों का पालन करने का आग्रह किया। इस अवसर पर राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि) ने उपराष्ट्रपति सी. पी. राधाकृष्णन का देवभूमि उत्तराखण्ड में हार्दिक स्वागत करते हुए विश्वास जताया कि उनके मार्गदर्शन से युवा चिकित्सकों को राष्ट्रसेवा की नई ऊर्जा एवं दिशा प्राप्त होगी। राज्यपाल ने कहा कि दीक्षांत समारोह विद्यार्थियों की साधना, समर्पण और सेवा भाव का उत्सव है तथा यह वह महत्वपूर्ण क्षण है, जब वर्षों की कठिन मेहनत एक नई जिम्मेदारी में परिवर्तित होती है। उन्होंने उपाधि प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि उनकी सफलता में माता-पिता के त्याग, गुरुजनों के मार्गदर्शन और राष्ट्र की अपेक्षाओं का महत्वपूर्ण योगदान है।

सम्पादकीय

बंगाल और तमिलनाडु की अग्निपरीक्षा

पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु में मतदान केवल एक चुनावी प्रक्रिया नहीं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की जीवंतता का प्रतीक है। यह वह क्षण है जब सत्ता का वास्तविक केंद्र—जनता—अपने अधिकार का प्रयोग कर शासन की दिशा तय करती है। लोकतंत्र का यह पर्व हर बार नई उम्मीदों, नए समीकरणों और नए जनादेश की संभावनाओं के साथ आता है।पश्चिम बंगाल में चुनावी मुकाबला हमेशा की तरह तीखा और बहुआयामी रहा है। यहां राजनीति केवल विकास के मुद्दों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि पहचान, संस्कृति और क्षेत्रीय अस्मिता भी चुनावी विमर्श को प्रभावित करती है। दूसरी ओर, तमिलनाडु की राजनीति में द्रविड़ विचारधारा की गहरी छाप है, जहां सामाजिक न्याय, क्षेत्रीय स्वाभिमान और कल्याणकारी नीतियां मुख्य चुनावी आधार बनती हैं।इन दोनों राज्यों में मतदाताओं की सक्रिय भागीदारी लोकतंत्र की ताकत को दर्शाती है। खास बात यह है कि युवा मतदाताओं की संख्या लगातार बढ़ रही है, जो राजनीति में बदलाव और जवाबदेही की नई मांग लेकर आए हैं। हालांकि, चुनावी माहौल में आरोप-प्रत्यारोप, ध्रुवीकरण और कभी-कभी पैसे या प्रभाव के इस्तेमाल जैसी चिंताएं भी सामने आती हैं, जो लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए चुनौती हैं।चुनाव आयोग और प्रशासन के लिए यह एक बड़ी परीक्षा है कि मतदान निष्पक्ष, शांतिपूर्ण और पारदर्शी तरीके से संपन्न हो। सुरक्षा व्यवस्था, स्वतंत्र निगरानी और सख्त नियमों का पालन इस प्रक्रिया की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए जरूरी है।लोकतंत्र की असली शक्ति मतदाता के विवेक में निहित है। यह जरूरी है कि हर मतदाता बिना किसी दबाव, प्रलोभन या भय के अपने मताधिकार का प्रयोग करे। क्योंकि एक-एक वोट मिलकर ही लोकतंत्र की मजबूत नींव तैयार करता है।आज का दिन केवल सरकार चुनने का नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों को सशक्त करने का अवसर है। यदि मतदाता जागरूक और जिम्मेदार रहेगा, तो यह अग्निपरीक्षा लोकतंत्र के लिए एक नई ऊर्जा और विश्वास का स्रोत बनेगी।

समाधान क्या है???

किसी भी महिला के लिए गर्भावस्था के शुरूआती तीन माह काफी चुनौतीपूर्ण होते हैं। इस दौरान महिला के शरीर में काफी बदलाव आते हैं। वजन बढ़ने के अलावा सुस्ती, जी मचलाना, उल्टी का अहसास, मार्निंग सिकनेस व अन्य कई तरह की स्वास्थ्य समस्याएं होती है। यही वह समय होता है, जब भ्रूण काफी तेजी से विकसित होता है। उसके कई महत्वपूर्ण अंग बनने शुरू हो जाते हैं। ट्राइमेस्टर के अंत तक भ्रूण एक मानव रूप भी प्राप्त करता है। यह शुरूआती तीन माह किसी भी गर्भवती स्त्री के लिए काफी नाजुक माने जाते हैं। इस दौरान जरा सी लापरवाही भी मिसकैरिज का कारण बन सकती हैं। अगर आप एक हेल्दी प्रेग्नेंसी चाहती हैं तो आपको शुरूआती तीन माह में इन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए. रहें हाइड्रेटेड गर्भावस्था में शरीर को तरल पदार्थों की अधिक आवश्यकता होती है, इससे भ्रूण की ऑक्सीजन और पोषक तत्वों की जरूरतें पूरी होती है। आपको इस समय हाइड्रेटेड रहने के लिए पानी के अलावा ताजा रस और स्मूदीज आदि का सेवन करें। लें प्रसवपूर्व विटामिन हेल्दी प्रेग्नेंसी के लिए डाक्टर के परामर्श पर प्रसवपूर्व विटामिन लें। गर्भावस्था की प्रारंभिक अवस्था में यह मां और भ्रूण दोनों के लिए बेहद आवश्यक है। आप आयरन, फोलिक एसिड और मल्टीविटामिन लें। जहां फोलिक एसिड भ्रूण को किसी भी तरह के जन्म दोष से बचाता है, बल्कि आयरन गर्भावस्था में अनीमिया को रोकता है। छोड़ें धूम्रपान अगर आप स्मोकिंग करती हैं, तो गर्भावस्था में इसे पूरी तरह त्याग दें। धूम्रपान कई तरह की जटिलताओं जैसे कम इम्युनिटी, लो बर्थ वेट, समय से पहले प्रसव, गर्भपात व एक्टापिक प्रेग्नेंसी की संभावनाओं को बढ़ाता है। इतना ही नहीं, धूम्रपान के कारण अचानक शिशु मृत्यु सिड्रोम का भी खतरा रहता है। इसलिए धूम्रपान को अलविदा कहना ही आपके लिए अच्छा रहेगा। धूम्रपान के अलावा तम्बाकू, अल्कोहल व कैफीन भी आपके लिए समस्या खड़ी कर सकता है, इसलिए इनसे भी दूरी बनाएं। खाने का ख्याल गर्भावस्था में संतुलित डाइट लेना चाहिए। आप विटामिन डी, ओमेगा.3 फैटी एसिड, कैल्शियम व अन्य विटामिन व मिनरल्स को अपनी डाइट में शामिल करें।

उत्तर प्रदेश में स्मार्ट मीटर पर सियासी उबाल

सौरभ वार्ष्णेय

उत्तर प्रदेश में आगामी वर्ष में विधानसभा चुनाव का बिगुल बज जायेगा । ऐसे में विपक्ष के लोग वर्तमान सरकार की हर छोटी से छोटी समस्या को भी मुद्दा बनाने से नहीं चूक रही। अभी हाल ही में नोयडा हुए मजदूर आंदोलन से सरकार उबर पाई थी कि अब दूसरा मुद्दा स्मार्ट मीटर योजना को लेकर आ गया। हालांकि प्रदेश सरकार की मंशा पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाने के उद्देश्य से शुरू की गई थी, जो अब आम जनता—खासकर महिलाओं—के गुस्से का कारण बनती जा रही है। हाल के दिनों में कई जिलों से महिलाओं के सड़कों पर उतरकर विरोध करने की खबरें सामने आई हैं, जो इस नीति के जमीनी असर को उजागर करती हैं। वहीं फिलहाल सरकार ने इस स्मार्ट मीटर पर रोक लगा दी है। प्रदेश में अभी जैसे तैसे कर गैस सिलेंडर की समस्या स उपजे मजदूर आंदोलन से निजात पाई थी कि और ऊपर से अब उत्तर प्रदेश में बढ़ते बिल और भरोसे का संकट के दौर से गुजर रहीं महिलाओं की स्मार्ट मीटर लगने के बाद उपभोक्ताओं की सबसे बड़ी शिकायत बिजली बिल में अचानक वृद्धि देखी जिसके चलते आगरा और मथुरा जैसे इलाकों में महिलाओं ने आरोप लगाया कि पहले की तुलना में बिल कई गुना बढ़ गए हैं, जबकि खपत में कोई बड़ा बदलाव नहीं हुआ। इसके साथ ही प्रीपेड सिस्टम ने समस्या को और बढ़ा दिया है—रिचार्ज खत्म होते ही बिजली कट जाती है। कई मामलों में बिल जमा करने के बाद भी आपूर्ति बहाल होने में देरी की शिकायतें सामने आई हैं। इस समस्या से जूझ रही गांवों और कस्बों में महिलाओं ने सीधे बिजली घरों का घेराव किया, प्रदर्शन किए और अधिकारियों के खिलाफ नारेबाजी की। आगरा में तो हालात ऐसे बने कि अधिकारियों को कार्यालय छोड़कर जाना पड़ा। यह विरोध सिर्फ आर्थिक बोझ का नहीं, बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी पर पड़ने वाले असर का भी है—रसोई, बच्चों की पढ़ाई और घर के काम सीधे बिजली पर निर्भर हैं, इसलिए महिलाएं इस मुद्दे को लेकर सबसे ज्यादा सक्रिय दिख रही हैं। स्मार्ट मीटर से जुड़ी तकनीकी समस्याएं भी विवाद का बड़ा कारण हैं। कहीं सोलर उपभोक्ताओं को गलत बिल मिल रहे हैं, तो कहीं कनेक्टिविटी और रीडिंग में गड़बड़ी की शिकायतें हैं इसके अलावा, बिना सहमति पुराने मीटर हटाने और नए मीटर लगाने के आरोपों ने जनता के भरोसे को और कमजोर किया है। लगातार विरोध और शिकायतों के बाद सरकार को कदम पीछे खींचने पड़े। स्मार्ट मीटर लगाने की प्रक्रिया पर फिलहाल रोक लगा दी गई। जांच के लिए तकनीकी समिति बनाई गई उपभोक्ताओं को राहत देने के लिए अस्थायी नियम लागू किए गए। यह कदम इस बात का संकेत है कि नीति और उसके क्रियान्वयन के बीच गंभीर खाई है।

स्मार्ट मीटर का उद्देश्य पारदर्शिता और ऊर्जा प्रबंधन को बेहतर बनाना था, लेकिन जमीनी स्तर पर यह तकनीकी सुधार सामाजिक असंतोष में बदल गया है। महिलाओं का उग्र विरोध यह बताता है कि जब किसी नीति का असर सीधे घर-परिवार की बुनियादी जरूरतों पर पड़ता है, तो वह केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक मुद्दा बन जाता है। स्मार्ट मीटर योजना अपने उद्देश्य में गलत नहीं, लेकिन इसकी जल्दबाजी, तकनीकी खामियां और संवाद की कमी ने इसे विवाद का केंद्र बना दिया है। यदि सरकार पारदर्शिता, जवाबदेही और उपभोक्ता हितों को प्राथमिकता नहीं देती, तो यह स्मार्ट पहल जन असंतोष का स्थायी कारण बन सकती है। उत्तर प्रदेश में स्मार्ट बिजली मीटरों की स्थापना पर सरकार द्वारा लगाई गई रोक ने एक नई बहस को जन्म दे दिया है। यह फैसला ऐसे समय में आया है जब ऊर्जा क्षेत्र में तकनीकी सुधारों को बढ़ावा देने की जरूरत बार-बार रेखांकित की जा रही है। सवाल यह है कि क्या यह कदम उपभोक्ताओं के हित में है या फिर सुधारों की गति को धीमा करने वाला? स्मार्ट मीटर को बिजली वितरण व्यवस्था में पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाने के लिए एक अहम साधन माना जाता है। ये मीटर वास्तविक समय में खपत का डेटा देते हैं, बिलिंग में त्रुटियों को कम करते हैं और चोरी पर लगाम लगाने में मददगार होते हैं। केंद्र सरकार की योजनाओं में भी इनका विशेष स्थान है। ऐसे में उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य का इस परियोजना पर ब्रेक लगाना स्वाभाविक रूप से ध्यान आकर्षित करता है। हालांकि, इस फैसले के पीछे उपभोक्ताओं की बढ़ती शिकायतें और असंतोष भी एक बड़ा कारण हैं। कई जगहों से यह आरोप सामने आए कि स्मार्ट मीटर के कारण बिजली बिलों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। ग्रामीण और निम्न आय वर्ग के उपभोक्ताओं में यह धारणा बनी कि यह तकनीक उनके खिलाफ काम कर रही है।

गर्मी के मौसम में लें अंगूर से बने इन व्यंजनों का मजा, मिलेगी ताजगी

अंगूर गर्मियों का एक स्वादिष्ट फल है, जिसमें कई जरूरी पोषक तत्व भी होते हैं। आमतौर पर लोग अंगूर का सेवन ऐसे ही करना पसंद करते हैं या फिर इसका जूस पीते हैं। हालांकि, क्या आप जानते हैं कि अंगूर से कई तरह के व्यंजन भी बनाए जा सकते हैं? इस लेख में हम आपको

कुछ ऐसे अंतरराष्ट्रीय व्यंजनों की रेसिपी बताने वाले हैं, जो अंगूर से बनाए जाते हैं और गर्मियों के दौरान बहुत अच्छे लगते हैं।

अंगूर का शरबत

अंगूर का शरबत एक ताजगी भरा पेय है, जिसे आप गर्मियों में आसानी से बना सकते हैं। इसके लिए सबसे पहले कुछ ताजे हरे या काले अंगूर लें और उन्हें अच्छे से धो लें। अब इन्हें मिक्सी में पीसकर इनका ताजा रस बना लें, फिर इसमें नींबू का रस मिला दें। इसमें पुदीने की पत्तियां और थोड़ी-सी चीनी भी डाल दें। इसे ठंडा करके बर्फ डालकर परोसें। यह पेय न केवल स्वादिष्ट है, बल्कि सेहत के लिए भी फायदेमंद है।

अंगूर की चटनी

अंगूर की चटनी एक अनोखा व्यंजन है, जिसे आप अपने खाने के साथ परोस सकते हैं। इसे बनाने के लिए सबसे पहले कुछ ताजे अंगूरों को मैश कर लें, फिर इसमें बारीक कटा हुआ प्याज, टमाटर, हरी मिर्च और धनिया पत्ती मिलाएं। अब इसमें नमक, गरम मसाला और नींबू का रस डालकर अच्छी तरह मिलाएं। आप इसमें अपनी पसंद के कुछ अन्य मसाले भी मिला सकते हैं, जिससे स्वाद भी बेहतर हो जाएगा।

अंगूर की जेली

अंगूर की जेली एक तरह की मिठाई है, जिसे आप आसानी से बना सकते हैं। यह बच्चों को खास तौर से बहुत पसंद आती है। इसके लिए सबसे पहले कुछ ताजे अंगूरों का रस निकाल लें, फिर इस रस को चीनी और जिलेटिन पाउडर के साथ पकाएं। जब तक यह गाढ़ा न हो जाए तब तक इसे पकाते रहें।

युवकों पर फायरिंग करने में बाज गैंग के दो नाबालिग सहित पांच पकड़े

– आरोपियों के कब्जे से दो तमंचे, कारतूस और तीन चाकू बरामद

हरिद्वार ,संवाददाता । रानीपुर कोतवाली क्षेत्र में ड्यूटी पर जा रहे युवकों से मारपीट और फायरिंग के मामले में पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर दो किशोरों को संरक्षण में लिया है। आरोपियों के कब्जे से दो तमंचे, कारतूस और तीन चाकू बरामद हुए हैं। सभी आरोपी बाज नाम से सोशल मीडिया ग्रुप से जुड़े थे और अवैध हथियारों के दम पर वर्चस्व दिखाते थे। एसएसपी नवनीत सिंह भुल्लर ने रोशनाबाद पुलिस मुख्यालय में बताया कि 21 अप्रैल की रात बीएचईएल फाउंड्री गेट के पास हन्नी (पुत्र टेकचंद, आर्यनगर) और उसका दोस्त वंशु (पुत्र सुरेंद्र, पाठी बाजार ज्वालापुर) पर हमला हुआ था। फायरिंग में वंशु के दाहिने हाथ में गोली लगी। 22 अप्रैल को हन्नी की तहरीर पर 8-10 युवकों के खिलाफ हत्या के प्रयास सहित अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया। रानीपुर एसएचओ मनोहर सिंह भंडारी के नेतृत्व में गठित टीम ने बुधवार रात फरहान (मोहल्ला कस्साबान, ज्वालापुर), अनमोल उर्फ धीरेंद्र बक्शी (अहबाबनगर, बिष्णुलोक कॉलोनी रानीपुर) और सागर उर्फ पहाड़ी (चोर गली, सुभाषनगर ज्वालापुर) को गिरफ्तार किया जबकि दो नाबालिगों को भी पकड़ा गया। फरहान और अनमोल से एक-एक तमंचा व कारतूस, सागर और दोनों किशोरों से चाकू बरामद हुए। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि उन्होंने इंस्टाग्राम पर बाज नाम से ग्रुप बनाया था। गैंग लोगों को डराने-धमकाने और अपना दबदबा बनाने के लिए हथियारों का इस्तेमाल करता था। वंशु पहले से दर्ज एक मामले में गवाह था जिससे रंजिश चल रही थी। घटना के दिन आरोपी अपने साथियों नोमान कुरैशी, सत्यम, उमर गुर्जर, नितिश, मुकुल और भानु प्रताप गोयल के साथ फाउंड्री गेट के पास खड़े थे। वंशु और हन्नी को रोककर पुरानी रंजिश को लेकर विवाद किया जो मारपीट में बदल गया। इसके बाद फरहान, अनमोल और नितिश ने तमंचों से फायरिंग कर दी, जिसमें वंशु घायल हो गया। सभी आरोपी मौके से फरार हो गए थे। पुलिस ने तीनों आरोपियों को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया, जबकि नाबालिगों को किशोर न्याय बोर्ड में पेश कर बाल संप्रेक्षण गृह भेजा गया है।

शिक्षकों ने निगम और तहसील के अधिकारियों का किया घेराव

हरिद्वार । शासकीय और अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों को आज से भवन गणना कार्य में लगाने के फैसले ने विवाद खड़ा कर दिया है। दूरदराज क्षेत्रों में ड्यूटी लगाए जाने से नाराज शिक्षकों ने शुक्रवार को तहसील और नगर निगम पहुंचकर जोरदार विरोध प्रदर्शन किया और अधिकारियों का घेराव किया। नगर निगम में सहायक नगर आयुक्त श्याम सुंदर के समक्ष शिक्षकों ने प्रशासन पर अनदेखी और धोखा देने का आरोप लगाया। उनका कहना है कि गणना कार्य विद्यालय के आसपास के क्षेत्रों में दिया जाना चाहिए था, ताकि वे अपने शैक्षणिक दायित्वों के साथ इसे पूरा कर सकें। शिक्षकों ने याद दिलाया कि पूर्व में बाल गणना के दौरान स्थानीय क्षेत्र ही आवंटित किए गए थे, लेकिन इस बार ऐसा नहीं किया गया।राजकीय प्राथमिक शिक्षक एसोसिएशन के ब्लॉक अध्यक्ष अमर क्रांति ने कहा कि दूरस्थ ड्यूटी से सबसे अधिक परेशानी महिला शिक्षकों को हो रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि शिक्षा विभाग को भरोसे में लिए बिना ही प्रशासन ने यह निर्णय थोप दिया, जिससे शिक्षकों के सामने गंभीर स्थिति पैदा हो गई है।

भारतीय संस्कृति उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने की कला

हरिद्वार । देव संस्कृति विवि के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने अपने यूरोप प्रवास के दौरान लिथुआनिया के प्रमुख शैक्षणिक केंद्रों में पहुंचकर भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभावी प्रसार किया। वहां के युवाओं और शोधार्थियों में भारतीय संस्कृति के प्रति अभूतपूर्व उत्साह देखने को मिला। डॉ. पण्ड्या ने लिथुआनिया में अध्ययनरत मास्टर और पीएचडी के विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति केवल कर्मकांड नहीं, बल्कि उन्नत, संतुलित और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने की कला है। उन्होंने समग्र शिक्षा, नैतिक मूल्यों और वैज्ञानिक अध्यात्म के समन्वय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि प्राचीन भारतीय सिद्धांतों में आज की वैश्विक समस्याओं के समाधान निहित हैं। उन्होंने युवाओं को इन सिद्धांतों को जानने, समझने और जीवन में अपनाने का आह्वान किया।

प्रवक्ता की मुख्य लिखित परीक्षा नौ मई से

हरिद्वार । उत्तराखण्ड लोक सेवा आयोग ने उत्तराखण्ड विशेष अधीनस्थ शिक्षा (प्रवक्ता संवर्ग समूह-ग) सेवा की सामान्य और महिला शाखा के लिए विषयवार मुख्य लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ प्रकार) का कार्यक्रम जारी कर दिया है। परीक्षाएं मई में चार अलग-अलग तिथियों पर आयोजित होंगी। निर्धारित कार्यक्रम के तहत नौ मई 2026 को भौतिक शास्त्र, 10 मई 2026 को नागरिक शास्त्र, 30 मई 2026 को हिन्दी और 31 मई 2026 को इतिहास विषय की परीक्षा आयोजित की जाएगी। सभी परीक्षाएं दो पालियों में होंगी। प्रथम पाली सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक और द्वितीय पाली दोपहर 2 बजे से शाम 5 बजे तक निर्धारित की गई है। उत्तराखंड लोक सेवा आयोग के सचिव अशोक कुमार पांडेय की ओर से जारी विज्ञप्ति में बताया गया है कि अभ्यर्थियों के प्रवेश-पत्र डाक से नहीं भेजे जाएंगे। अभ्यर्थी आयोग की आधिकारिक वेबसाइट से ऑनलाइन प्रवेश-पत्र डाउनलोड कर सकेंगे। भौतिक शास्त्र के लिए 24 अप्रैल, नागरिक शास्त्र के लिए 25 अप्रैल, हिन्दी के लिए 15 मई तथा इतिहास के लिए 16 मई 2026 से प्रवेश-पत्र उपलब्ध होंगे।

कांवड़ मेले से पहले सड़कों को गड्ढामुक्त करने का लक्ष्य

हरिद्वार । चारधाम यात्रा और कांवड़ मेले की तैयारियों को लेकर जिला प्रशासन ने सड़क सुरक्षा को शीर्ष प्राथमिकता दी है। जिलाधिकारी मयूर दीक्षित की अध्यक्षता में शुक्रवार को जिला कार्यालय में सड़क सुरक्षा और दुर्घटना न्यूनीकरण अनुश्रवण समिति की बैठक आयोजित हुई, जिसमें अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए गए कि सितंबर तक सभी सड़कों को गड्ढामुक्त किया जाए। जिलाधिकारी ने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं पर नियंत्रण के लिए यातायात नियमों का कड़ाई से पालन कराया जाए। उन्होंने तेज रफ्तार, शराब पीकर वाहन चलाने, ओवरलोडिंग और बिना हेलमेट वाहन चलाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। परिवहन विभाग और पुलिस को शाम 6 बजे से रात 10 बजे तक विशेष चेकिंग अभियान चलाने को कहा है। राष्ट्रीय राजमार्ग रुड़की-हरिद्वार-नजीबाबाद और लोक निर्माण विभाग की सड़कों पर गड्ढों और पेचवर्क को प्राथमिकता से पूरा करने के निर्देश दिए गए। भूपतवाला से बहादराबाद चौराहे तक सड़क सुधार कार्य जल्द पूरा करने को कहा गया, ताकि तीर्थ यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

रानीपुर में प्रतिबंधित मांस के साथ चार आरोपी गिरफ्तार

हरिद्वार । रानीपुर क्षेत्र में पुलिस ने प्रतिबंधित मांस बेचने के मामले का खुलासा करते हुए बड़ी कार्रवाई की है। ऑपरेशन प्रहार के तहत उत्तराखंड गोवंश स्क्वाड, गढ़वाल परिक्षेत्र और कोतवाली रानीपुर की संयुक्त टीम ने शुक्रवार सुबह मुखबिर की सूचना पर ग्राम दादूपुर गोविंदपुर स्थित एक घर पर छापेमारी की। कार्रवाई के दौरान पुलिस ने मौके से चार आरोपियों को गिरफ्तार किया, जबकि एक आरोपी फरार हो गया। पुलिस के अनुसार, गिरफ्तार आरोपियों की पहचान अकरम (60), अजीम (22), आदिल (50) और नसरत (27) के रूप में हुई है। ये सभी दादूपुर सलेमपुर क्षेत्र के निवासी हैं। टीम ने मौके से करीब 300 किलो प्रतिबंधित मांस और पशु कटान में इस्तेमाल होने वाले उपकरण बरामद किए हैं। इस मामले में कोतवाली रानीपुर में उत्तराखंड गोवंश संरक्षण अधिनियम की धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस ने बताया कि फरार आरोपी की तलाश के लिए संभावित ठिकानों पर दबिश दी जा रही है।

बालिका से अश्लील हरकत व छेड़खानी में कथित बाबा गिरफ्तार

हरिद्वार,संवाददाता । श्यामपुर थाना क्षेत्र में छह वर्षीय बालिका से अश्लील हरकत और छेड़खानी करने के आरोप में पुलिस ने एक कथित बाबा को गिरफ्तार किया है। आरोपी शिव कुमार बाबा निवासी कांगड़ी, थाना श्यामपुर को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया गया। आरोपी एक नामी अखाड़े से जुड़ा हुआ बताया जा रहा है, हालांकि पुलिस ने इसकी पुष्टि नहीं की है। एसएसपी नवनीत सिंह भुल्लर ने बताया कि 22 अप्रैल को एक गांव के रहने वाले व्यक्ति ने पुलिस को सूचना दी कि उनकी छह वर्षीय बेटी अपने भाईयों के साथ घर के बाहर खेल रही थी। दोपहर में बालिका घबराई हुई घर आई और माता-पिता को बताया कि एक बाबा ने उसके साथ गलत हरकत की है। पिता ने बाहर आकर देखा तो कांगड़ी के एक आश्रम में रहने वाला शिवकुमार बाबा भागते हुए दिखाई दिया। अन्य बच्चों ने बताया कि उसी बाबा ने छेड़खानी की है। इस संबंध में पॉक्सो एक्ट सहित संबंधित धाराओं में प्राथमिकी दर्ज की गई। एसओ नितेश शर्मा के नेतृत्व में पुलिस टीम ने खोजबीन शुरू की। मुखबिर की सहायता से बृहस्पतिवार को आरोपी शिव कुमार बाबा को तिरछा पुल से गिरफ्तार कर लिया गया। आरोपी को कोर्ट में पेश करने के बाद जेल भेज दिया है।

धामी के नेतृत्व मे हैट्रिक निश्चित, कांग्रेस हताश और निराश: चौहान

देहरादून (संवाददाता)। भाजपा के प्रदेश मीडिया प्रभारी मनवीर सिंह चौहान ने कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व मे प्रदेश भर में विशेषकर युवा और महिलाओं मे उत्साह का माहौल है और भाजपा मिशन 2027 मे ऐतिहासिक हैट्रिक लगाने जा रही है। वहीं धामी के नेतृत्व को लेकर बेचैन कांग्रेस हताश और निराश है।

कांग्रेस के सवालों पर प्रतिक्रिया देते हुए चौहान ने कहा कि जनता सीएम धामी के नेतृत्व से संतुष्ट है और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के कथन पर कांग्रेस की टिप्पणी से समझा जा सकता है कि वह किस तरह से बेचैन और निराश है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस को भाजपा पर मंथन नही बल्कि केंद्र द्वारा गुटीय संघर्ष को रोकने के लिए बनाये गए चतुर्भुज नेतृत्व पर करने की जरूरत है, क्योंकि वहाँ अब कई कोण उभर कर सामने आ रहे है। एक तरफ कांग्रेस और दूसरी और कोपभवन से बाहर आये हरदा पगडंडिया नाप रहे हैं। यह उनकी राज्य और केंद्रीय नेतृत्व को सीधी चुनौती है। चौहान ने कहा कि कांग्रेस एंटी इनकम्बेसी का राग फिर अलाप रही है लेकिन उसे समझना चाहिए कि राज्य मे दो बार सीएम धामी ऐतिहासिक कारनामा दिखा चुके है। धामी के कार्यकाल मे जो ऐतिहासिक विकास कार्य हुए हैं वह देश के अन्य राज्यों के लिए भी नजीर बने है। उन्होंने कहा कि भाजपा विकास कार्यों को लेकर जनता के पास जा रही है, जबकि कांग्रेस के पास अफवाहों की कुंडली के सिवाय कुछ नही है। नकल विरोधी कानून से युवाओं को पारदर्शिता का कवच देने, महिलाओं को क्षेतिज आरक्षण, यूसीसी, लैंड जिहाद के खिलाफ कड़ा कानून सहित कई कार्य किये गए है। केंद्र से बेहतर तालमेल के चलते ही राज्य मे ढाई लाख करोड़ की योजनाएं धरातल पर उतरने वाली है। उत्तराखंड आज पर्यटन के रूप मे विश्व पटल पर पहचान बना चुका है। वही 40 हजार के लगभग सरकारी नौकरियां तथा स्वरोजगार की योजनाओं से लाखों लोग लाभांवित हो रहे हैं। चौहान ने कहा कि धामी के चमत्कारिक नेतृत्व से कांग्रेस की परेशानी को समझा जा सकता है। हताश निराश कांग्रेस के पास अब विकल्प नही है और यह चुनाव विकास कार्यो को लेकर होने वाला है। भाजपा जन अपेक्षाओं पर शत प्रतिशत उतरी है। अब तक हर वायदे पर खरे उतरे सीएम धामी के नेतृत्व मे भाजपा ऐतिहासिक हैट्रिक बनाने जा रही है और इसके लिए उसे जनता का पूरा समर्थन है।

बिहार में भाजपा का युग: एक नया राजनीतिक अध्याय

सौरभ वार्ष्णेय

राजनीति भी ऐसा मौसम है पता नहीं कब क्या कुछ हो जाये ? ऐसे ही बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का कुछ नहीं कहा जा सकता कब उनका फैसला बदल जाये। वैसे भी बिहार की राजनीति लंबे समय तक जातीय समीकरणों, क्षेत्रीय दलों और गठबंधन की जटिलताओं के इर्द-गिर्द घूमती रही है। लेकिन हाल के वर्षों में भारतीय जनता पार्टी का उभार राज्य की राजनीति में एक नए अध्याय का संकेत दे रहा है। यह बदलाव केवल सत्ता परिवर्तन तक सीमित नहीं है, बल्कि राजनीतिक सोच, विकास के एजेंडे और नेतृत्व शैली में भी परिवर्तन का द्योतक है। ऐसे में बिहार में भारतीय जनता पार्टी ने सम्राट चौधरी को विधायक दल का नेता चुना जाना और बिहार के वह मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे। बिहार में भारतीय जनता पार्टी का विस्तार कोई अचानक हुई घटना नहीं है। यह एक लंबी रणनीतिक यात्रा का परिणाम है, जिसमें संगठन की मजबूती, जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं का नेटवर्क और केंद्र की नीतियों का प्रभाव शामिल है। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार की योजनाओं—जैसे उज्ज्वला, आयुष्मान भारत और पीएम आवास योजना—ने राज्य के ग्रामीण और गरीब वर्गों में भाजपा की स्वीकार्यता बढ़ाई है। इससे पार्टी को एक मजबूत जनाधार बनाने में मदद मिली है।

हालांकि, बिहार की राजनीति में नीतीश कुमार जैसे अनुभवी नेता और राष्ट्रीय जनता दल जैसे प्रभावशाली दल अभी भी मजबूत स्थिति में हैं। ऐसे में भाजपा का यह उभार एक प्रतिस्पर्धात्मक राजनीतिक वातावरण तैयार करता है, जहां सत्ता की लड़ाई और अधिक दिलचस्प और जटिल हो गई है। भाजपा के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह अपने विकास के वादों को जमीन पर उतारे। बिहार आज भी बेरोजगारी, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी समस्याओं से जूझ रहा है। भाजपा को इन क्षेत्रों में ठोस सुधार करना होगा। यह उसके लिए एक स्थायी राजनीतिक आधार बनाने का अवसर हो सकता है। इसके अलावा, सामाजिक समरसता और जातीय संतुलन बनाए रखना भी भाजपा के लिए एक महत्वपूर्ण कसौटी होगी। बिहार की सामाजिक संरचना बेहद संवेदनशील है, जहां छोटी-सी राजनीतिक चूक भी बड़े सामाजिक तनाव का कारण बन सकती है। बिहार में भाजपा का उभरता हुआ युग एक परिवर्तनशील दौर का प्रतीक है। यह देखना दिलचस्प होगा कि यह बदलाव राज्य को विकास और स्थिरता की ओर ले जाता है या फिर यह केवल सत्ता के नए समीकरणों तक ही सीमित रह जाता है। आने वाले समय में बिहार की राजनीति किस दिशा में जाएगी, यह न केवल राज्य बल्कि पूरे देश की राजनीतिक धारा को भी प्रभावित करेगा।

बिहार में सम्राट चौधरी का मुख्यमंत्री बनना

ऐसे में भाजपा ने सम्राट चौधरी को विधायक दल का नेता चुना है तो यह तय है कि सम्राट चौधरी मुख्यमंत्री बनते ही केवल नेतृत्व परिवर्तन नहीं बल्कि एक व्यापक राजनीतिक संदेश और रणनीतिक बदलाव का संकेत होगा। सबसे पहले, यह कदम भारतीय जनता पार्टी के उस प्रयास के रूप में देखा जाएगा, जिसमें वह बिहार में अपनी स्वतंत्र पहचान को और मजबूत करना चाहती है। लंबे समय तक नीतीश कुमार के नेतृत्व में गठबंधन की राजनीति करने के बाद, भाजपा अब अपने चेहरे के साथ चुनावी मैदान में उतार दिया है। सम्राट चौधरी का सामाजिक आधार भी इस चर्चा को महत्वपूर्ण बनाता है। वे पिछड़े वर्ग से आते हैं, जो बिहार की राजनीति में निर्णायक भूमिका निभाता है। ऐसे में उनका मुख्यमंत्री बनना सामाजिक प्रतिनिधित्व के नए समीकरण साध सकता है और भाजपा को उन वर्गों में और गहराई तक पहुंचाने में मदद कर सकता है, जहां अब तक अन्य दलों का प्रभाव रहा है। हालांकि, यह रास्ता आसान नहीं होगा। बिहार जैसे राज्य में प्रशासनिक अनुभव, गठबंधन संतुलन और जमीनी पकड़ बेहद महत्वपूर्ण होती है। लालू प्रसाद यादव और तेजस्वी यादव जैसे विपक्षी नेताओं की मजबूत राजनीतिक पकड़ के बीच सम्राट चौधरी को अपनी स्वीकार्यता साबित करनी होगी। इसके अलावा, यह भी देखना दिलचस्प होगा कि क्या भाजपा इस बदलाव के जरिए युवाओं और नए मतदाताओं को आकर्षित कर पाती है या नहीं। क्योंकि आज की राजनीति में केवल जातीय समीकरण ही नहीं, बल्कि विकास, रोजगार और सुशासन भी उतने ही अहम मुद्दे बन चुके हैं। सम्राट चौधरी का मुख्यमंत्री बनना बिहार की राजनीति में एक नए अध्याय की शुरुआत हो सकता है, लेकिन इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वे उम्मीदों पर कितना खरे उतरते हैं। यह केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि विश्वास और प्रदर्शन की एक बड़ी परीक्षा होगी।

अगर हम सम्राट चौधरी के राजनीतिक करियर की बात करे तो बिहार की समकालीन राजनीति में तेजी से उभरते नेतृत्व का उदाहरण माना जाता है। उनका सफर छात्र राजनीति से लेकर राज्य की सत्ता के शीर्ष तक पहुंचने का रहा है।

सम्राट चौधरी का जन्म बिहार के एक राजनीतिक परिवार में हुआ। उनके पिता शकुनी चौधरी भी राज्य की राजनीति में सक्रिय रहे। सम्राट चौधरी ने अपने राजनीतिक करियर की शुरुआत छात्र राजनीति से की और धीरे-धीरे मुख्यधारा की राजनीति में मजबूत पहचान बनाई। सम्राट चौधरी ने अपने करियर में कई राजनीतिक दलों के साथ काम किया। सम्राट चौधरी बिहार सरकार में मंत्री भी रह चुके हैं और संगठन में उनकी पकड़ मजबूत मानी जाती है। बीजेपी में उन्होंने प्रदेश अध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पद संभाले, जिससे उनकी राजनीतिक स्थिति और मजबूत हुई। राजनीतिक परिस्थितियों और पार्टी के रणनीतिक निर्णयों के चलते सम्राट चौधरी को बिहार की राजनीति में प्रमुख चेहरा बनाया गया। मुख्यमंत्री बने तो यह उनके लंबे राजनीतिक अनुभव, संगठनात्मक कौशल और सामाजिक समीकरणों को साधने की क्षमता का परिणाम माना जाएगा।

उनकी राजनीतिक विशेषताएं। ओबीसी (पिछड़ा वर्ग) नेतृत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। आक्रामक और स्पष्ट वक्ता सहित संगठन और जनाधार दोनों पर पकड़ रखते हैं।

सम्राट चौधरी का करियर यह दिखाता है कि बिहार की राजनीति में लगातार सक्रियता, रणनीति और समय के अनुसार निर्णय लेना कितना महत्वपूर्ण है। वे आज राज्य की राजनीति में एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली नेता के रूप में स्थापित हो चुके हैं। 2026 के अनुसार भाजपा के 16 वें राज्य के मुख्यमंत्री होंगे सम्राट चौधरी ।

नीतीश कुमार युग का अंत

नीतीश कुमार का नाम बिहार की राजनीति में एक लंबे समय तक स्थिरता, सुशासन और सामाजिक संतुलन के प्रतीक के रूप में लिया जाता रहा है। लगभग दो दशकों तक विभिन्न चरणों में सत्ता संभालने वाले नीतीश कुमार ने राज्य की राजनीति को नई दिशा दी। लेकिन अब बदलते राजनीतिक समीकरण और नेतृत्व की नई मांगों के बीच उनके युग के अंत की चर्चा तेज हो रही है। नीतीश कुमार का उदय ऐसे समय में हुआ जब बिहार राजनीतिक अस्थिरता और पिछड़ेपन की छवि से जूझ रहा था। उन्होंने सड़कों, शिक्षा, स्वास्थ्य और कानून-व्यवस्था के क्षेत्र में उल्लेखनीय सुधार किए। 'सुशासन बाबू' के रूप में उनकी पहचान बनी, जो प्रशासनिक दक्षता और विकास के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक थी। हालांकि, समय के साथ उनकी राजनीतिक रणनीतियों में बार-बार बदलाव—कभी के साथ गठबंधन, तो कभी किसी के साथ—ने उनकी विश्वसनीयता पर सवाल खड़े किए। गठबंधनों की इस राजनीति ने उन्हें सत्ता में बनाए रखा, लेकिन जनता के एक वर्ग में असमंजस और असंतोष भी पैदा किया। आज बिहार की राजनीति में युवा नेतृत्व, नई सोच और स्पष्ट वैचारिक दिशा की मांग बढ़ रही है। ऐसे में नीतीश कुमार का नेतृत्व पहले जैसा प्रभावशाली नहीं दिखता। उनकी उम्र, बदलते राजनीतिक हालात और लगातार बदलते समीकरण इस बात का संकेत देते हैं कि राज्य अब एक नए नेतृत्व की ओर बढ़ रहा है। यह भी सच है कि किसी भी नेता का राजनीतिक जीवन स्थायी नहीं होता। हर युग का एक अंत होता है और एक नई शुरुआत भी। नीतीश कुमार के योगदान को नकारा नहीं जा सकता—उन्होंने बिहार को एक मजबूत आधार दिया, जिस पर आगे का विकास संभव है। नीतीश युग का अंत केवल एक व्यक्ति का राजनीतिक अवसान नहीं, बल्कि बिहार की राजनीति में एक नए अध्याय की शुरुआत का संकेत है। आने वाला समय यह तय करेगा कि यह परिवर्तन राज्य के लिए कितना सकारात्मक साबित होता है।

आखिरकार सुनी गई आधी आबादी की आवाज़

आर. विमला, आईएएस

नारी शक्ति वंदन अधिनियम और भारतीय लोकतंत्र में महिलाओं का न्यायोचित स्थान

जब महिलाएँ सशक्त होती हैं, तो भारत मजबूत होता है। घर की गरिमा से लेकर संसद में समान आवाज़ तक, यह एक नए और आत्मविश्वास से भरे भारत की परिकल्पना है। — प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत की महिलाएँ सदैव महान कार्यों में सक्षम रही हैं। वैदिक काल में गार्गी और मैत्रेयी ने बड़े-बड़े दार्शनिकों को निरुत्तर कर दिया था। पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होल्कर ने जिस न्यायपूर्ण तरीके से अपने राज्य का शासन चलाया, उसकी बराबरी उनके समकालीन शासक नहीं कर सके। रानी लक्ष्मीबाई साहस की एक अमर मिसाल बन गईं। फिर भी, स्वतंत्र भारत—जो समानता के सिद्धांत पर आधारित एक संवैधानिक गणराज्य है ने इन महान महिलाओं की उत्तराधिकारियों को अपनी विधायिकाओं में शायद ही कोई जगह दी। पहली लोकसभा में महिला सदस्यों की संख्या मात्र 4.4 प्रतिशत थी। सात दशक बाद, 17वीं लोकसभा में भी यह आंकड़ा बढ़कर केवल 14.4 प्रतिशत तक ही पहुँच पाया। व्यक्तिगत प्रतिभा ने तो अपनी जगह बना ली थी, लेकिन व्यवस्थागत बदलाव अभी भी नहीं आया था। असल में, महिलाएं अपने ही लोकतंत्र में एक तरह से मेहमान बनकर ही रह गईं।

हमारे संविधान ने पहले ही दिन से यह स्वीकार किया था कि जब सदियों से ढांचागत विसंगतियां जड़ जमाए बैठी हों, तो केवल औपचारिक समानता पर्याप्त नहीं होती। संरक्षणात्मक भेदभाव के सिद्धांत के तहत अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और बाद में पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं के लिए सीटें आरक्षित की गईं। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि पंचायतों में आरक्षण की व्यवस्था सफल रही है: 24 मार्च 2026 तक, निर्वाचित पंचायत प्रतिनिधियों में से लगभग 49.75 प्रतिशत महिलाएँ हैं। जिन जगहों पर महिलाएँ शासन करती हैं, वहाँ पानी की आपूर्ति सुचारू होती है, साफ़-सफ़ाई की स्थिति बेहतर होती है और लड़कियाँ स्कूल जाना जारी रखती हैं। इसके बावजूद, संसद में भी इसी सिद्धांत को लागू करने के उद्देश्य से जो विधेयक पेश किए गए थे, वे राजनीतिक इच्छाशक्ति के अभाव में दशकों तक बार-बार निष्प्रभावी होते रहे। वह अधूरी कड़ी 19 सितंबर 2023 को पूरी हुई। भारत के नए संसद भवन में आयोजित कामकाज के पहले ही सत्र में, नारी शक्ति वंदन अधिनियम को संसद के दोनों सदनों में, प्रत्येक राजनीतिक दल के सर्वसम्मत समर्थन से पारित किया गया। हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विधेयक पेश करते हुए दोनों सदनों को बताया: यह कानून केवल एक कानून नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक भारतीय महिला की शक्ति, त्याग और सामर्थ्य के प्रति एक श्रद्धांजलि है।

यह अधिनियम लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक-तिहाई सीटें आरक्षित करता है, जिसमें अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की महिलाओं के लिए उप-कोटा भी शामिल है। नए संसद भवन का यह पहला अधिनियम होना अपने आप में एक घोषणा थी: अमृत काल के लोकतंत्र की संरचना पूरे भारत के लिए और सभी की भागीदारी के साथ निर्मित की जाएगी।

इस अधिनियम में बदलाव लाने की अपार क्षमता है, क्योंकि इसके लागू होने से संसद में महिला सदस्यों की संख्या में भारी वृद्धि होगी। महिला विधायक निरंतर स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा और सुरक्षा को प्राथमिकता देती हैं—ये वही क्षेत्र हैं, जहाँ भारत में लैंगिक असमानता सबसे अधिक है। एक ऐसी संसद, जिसमें एक-तिहाई सदस्य महिलाएँ होंगी, वह अलग तरह के प्रश्न पूछेगी और अलग तरह के विचार सुनेगी। इससे भारतीय लोकतंत्र की गुणवत्ता में सुधार होगा, न कि केवल उसकी बाहरी छवि में।

गरिमा से लोकतंत्र तक की यात्रा

हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हमेशा यह समझा है कि ज़मीनी स्तर पर सशक्तिकरण के बिना राजनीतिक सशक्तिकरण खोखला होता है। उनके द्वारा शुरू की गई यह यात्रा अत्यंत बुनियादी गरिमा से लेकर सर्वोच्च लोकतांत्रिक भागीदारी तक एक सुविचारित पथ पर आगे बढ़ती है। इसकी शुरुआत एक शौचालय से हुई। स्वच्छ भारत मिशन के तहत बनाए गए 10 करोड़ घरेलू शौचालयों ने उन महिलाओं को सुरक्षा और आत्म-सम्मान लौटाया, जिन्हें लंबे समय से इन दोनों से वंचित रखा गया था। जल जीवन मिशन ने 15 करोड़ से ज्यादा ग्रामीण घरों तक नल का पानी पहुँचाया। महिलाओं को मीलों पैदल चलकर पानी ढो कर लाने से मुक्ति मिली जिससे उनका सुबह का कीमती समय जाया हो जाता था।

'पीएम उज्ज्वला योजना' के 10.56 करोड़ एलपीजी कनेक्शनों ने महिलाओं को धुएं से भरी रसोई से मुक्ति दिलाई। पीएम आवास योजना के तहत महिलाओं के नाम पर घर बनाए गए। 55 प्रतिशत से अधिक महिलाओं के स्वामित्व वाले जन धन खातों ने उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान की। मुद्रा योजना के ऋण, स्वयं सहायता समूह, लखपति दीदी, सखी, वन स्टॉप सेंटर और तीन तलाक का उन्मूलन: प्रत्येक योजना उसी सीढ़ी का अगला पायदान थी, जो उन्हें केवल गुज़ारा करने की स्थिति से गरिमा की ओर, गरिमा से सामर्थ्य की ओर, और सामर्थ्य से नेतृत्व की ओर निरंतर बढ़ाती गई।

प्रधानमंत्री मोदी ने चारधाम यात्रा के लिए प्रेषित की शुभकामनाएं

डिजिटल उपवास पर रहते हुए, उत्तराखंड की प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लें तीर्थयात्री

प्रधानमंत्री ने उत्तराखंड आने वाले तीर्थयात्रियों से पांच संकल्प अपनाने की अपील की

देहरादून,संवाददाता । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चारधाम यात्रा शुरु होने पर देशवासियों को शुभकामना संदेश देते हुए, उत्तराखंड आने वाले तीर्थयात्रियों से पांच संकल्पों का पालन करने का आग्रह किया है। केदारनाथ धाम के कपाट खुलने पर प्रेषित अपने संदेश में प्रधानमंत्री ने कहा कि - देवभूमि उत्तराखंड की पावन धरती पर चारधाम यात्रा का शुभारंभ हो गया है। उन्होंने कहा कि बाबा केदार के दर्शन सहित चारों धामों की यह पावन यात्रा भारत की सनातन सांस्कृतिक चेतना का एक भव्य उत्सव है। जगद्गुरु आदि शंकराचार्य ने बद्रीनाथ और केदारनाथ की यात्राओं से भारतीय संस्कृति को एक नई दिशा दी थी। जगद्गुरु रामानुजाचार्य और जगद्गुरु माध्वाचार्य ने भी अपने धर्मविचारों को समृद्ध करने के लिए बद्रीनाथ की यात्रा की थी। आज भी हिमालय की गोद में विराजमान ये चारों धाम हमारी शाश्वत आस्था और विश्वास के दिव्य केंद्र हैं। हर वर्ष विविध भाषाओं, परंपराओं और संस्कृतियों के लोग यहां पहुंचते हुए 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के भाव को और अधिक सशक्त करते हैं। इस वर्ष की यात्रा भी इसी परंपरा का विस्तार है।

विकसित भारत में विकसित उत्तराखंड की भूमिका

प्रधानमंत्री ने अपने संदेश में कहा है कि विकसित भारत के संकल्प में विकसित उत्तराखंड की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने कहा कि कुछ वर्ष पहले, उन्होंने बाबा केदार के द्वार पर खुद ये कहा था कि ये दशक उत्तराखंड का दशक होगा। आज उत्तराखंड की प्रगति इस विश्वास को साकार कर रही है। उत्तराखंड आज पर्यटन, आध्यात्मिकता और आर्थिक प्रगति, तीनों क्षेत्रों में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। पिछले कुछ वर्षों से उत्तराखंड में विकास का जो महायज्ञ चल रहा है, उसने चारधाम यात्रा को पहले से अधिक सुगम, सुरक्षित और दिव्य बनाया है। जिससे श्रद्धालुओं, संतजनों और पर्यटकों को सुविधा हो रही है। प्रधानमंत्री ने उत्तराखंड आने वाले अतिथियों से अपील करते हुए कहा कि वे अपनी यात्रा के दौरान डिजिटल उपवास रखते हुए, उत्तराखंड की प्राकृतिक सुंदरता को जीने का प्रयास भी करें। इससे उन्हें एक अलग संतुष्टि भी मिलेगी।

पांच संकल्प

पहला संकल्प - स्वच्छता सर्वोपरि

धाम और उसके आसपास स्वच्छता बनाए रखें। नदियों को साफ रखने के लिए अपना योगदान दें। सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्त यात्रा का संकल्प लें और इस पावन धरा की गरिमा को बनाए रखें।

दूसरा संकल्प - प्रकृति और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता

हिमालय की इस दिव्य धरा के प्रति संवेदनशील रहे। प्रकृति के संतुलन को बनाए रखते हुए, एक पेड़ मां के नाम' जैसे प्रयासों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण में योगदान दें।

तीसरा संकल्प - सेवा, सहयोग और एकता पर बल

पुरातन काल से तीर्थ यात्राएं सर्वजन की सेवा और सामाजिक समरसता को स्थापित करने का माध्यम रही हैं। आज भी लोग इसी सेवा भाव से तीर्थयात्रियों की सेवा करते हैं। इसीलिए तीर्थयात्री अपनी यात्रा के प्रत्येक दिन, किसी ना किसी रूप में, लोगों की सेवा का एक काम अवश्य करें। सहयात्रियों की सहायता करें और देश की विभिन्न जगहों से आए लोगों से जुड़े। उनकी परंपराओं का सहभागी बनकर 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को इस यात्रा के माध्यम से सशक्त करें।

'नारी शक्ति' के मुद्दे पर आर-पार: परेड ग्राउंड से घंटाघर तक धामी की हुंकार

देहरादून,संवाददाता । राजधानी की सड़कों पर शुक्रवार को मातृशक्ति का सैलाब उमड़ पड़ा। परेड ग्राउंड से लेकर घंटाघर तक पैर रखने की जगह नहीं थी। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी खुद हजारों महिलाओं के साथ जन आक्रोश पदयात्रा में शामिल हुए। मौका था 'महिला जन आक्रोश रैली' का, जहां सीएम का तेवर बेहद तल्ख नजर आया। मुख्यमंत्री ने मंच से दहाड़ते हुए विपक्ष पर सीधा प्रहार किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी महिलाओं को लोकतांत्रिक अधिकार देने के लिए 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' लाए थे। लेकिन लोकसभा में संख्या बल के फेर में इसे उलझा दिया गया। धामी ने दो टूक कहा कि विपक्ष ने षड्यंत्र रचकर आधी आबादी का हक छीना है। यह सिर्फ राजनीतिक विरोध नहीं, बल्कि देश की नारी शक्ति के खिलाफ किया गया 'महापाप' है।

ताजा राजनीतिक घटनाक्रम को देखें तो हाल ही में संसद में संविधान (131वां संशोधन) विधेयक, 2026 को लेकर भारी हंगामा हुआ है। 16 अप्रैल 2026 को पेश हुए परिसीमन से जुड़े इन विधेयकों पर विपक्ष के रुख को भाजपा अब सड़क पर ले आई है। देहरादून की इस रैली में धामी ने इसी राष्ट्रीय मुद्दे को स्थानीय भावनाओं से जोड़ दिया। उन्होंने साफ कहा कि अब देश की सजग नारी अन्याय के विरुद्ध खुद आवाज उठाएगी। मुख्यमंत्री ने केंद्र सरकार की उपलब्धियों का कच्चा चिट्ठा भी जनता के सामने रखा। उन्होंने उज्ज्वला योजना से लेकर स्टार्टअप इंडिया तक का जिक्र किया। धामी ने कहा कि पीएम मोदी ने आदिवासी समाज की बेटी को देश के सर्वोच्च पद पर बिठाकर और निर्मला सीतारमण को वित्त मंत्रालय सौंपकर असल सशक्तिकरण दिखाया है। तीन तलाक जैसी कुप्रथा का अंत करना इसी कड़ी का हिस्सा था। सिर्फ केंद्र ही नहीं, सीएम ने राज्य सरकार की उपलब्धियों पर भी जोर दिया। उत्तराखंड सरकार ने सरकारी नौकरियों में महिलाओं को 30 प्रतिशत आरक्षण का कानूनी कवच दिया है। इसके अलावा समान नागरिक संहिता (UCC) लागू कर उनके अधिकारों की रक्षा की गई है। धामी ने राज्य की आर्थिक तरक्की का हवाला देते हुए बताया कि अब तक 2 लाख 65 हजार से अधिक महिलाएं 'लखपति दीदी' बन चुकी हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, इस साल मार्च तक यह आंकड़ा 2.55 लाख था, जिसमें अब और इजाफा हुआ है। रैली में सियासी दिग्गजों का जमावड़ा रहा। राज्यसभा सांसद महेंद्र भट्ट और टिहरी सांसद माला राज्यलक्ष्मी शाह ने भी मातृशक्ति को संबोधित किया।विधायक सविता कपूर, आशा नौटियाल और नेहा जोशी समेत भाजपा की तमाम महिला नेत्री इस आक्रोश यात्रा का हिस्सा बनीं। पूरी पदयात्रा के दौरान विपक्ष विरोधी नारों से देहरादून गूंजता रहा।

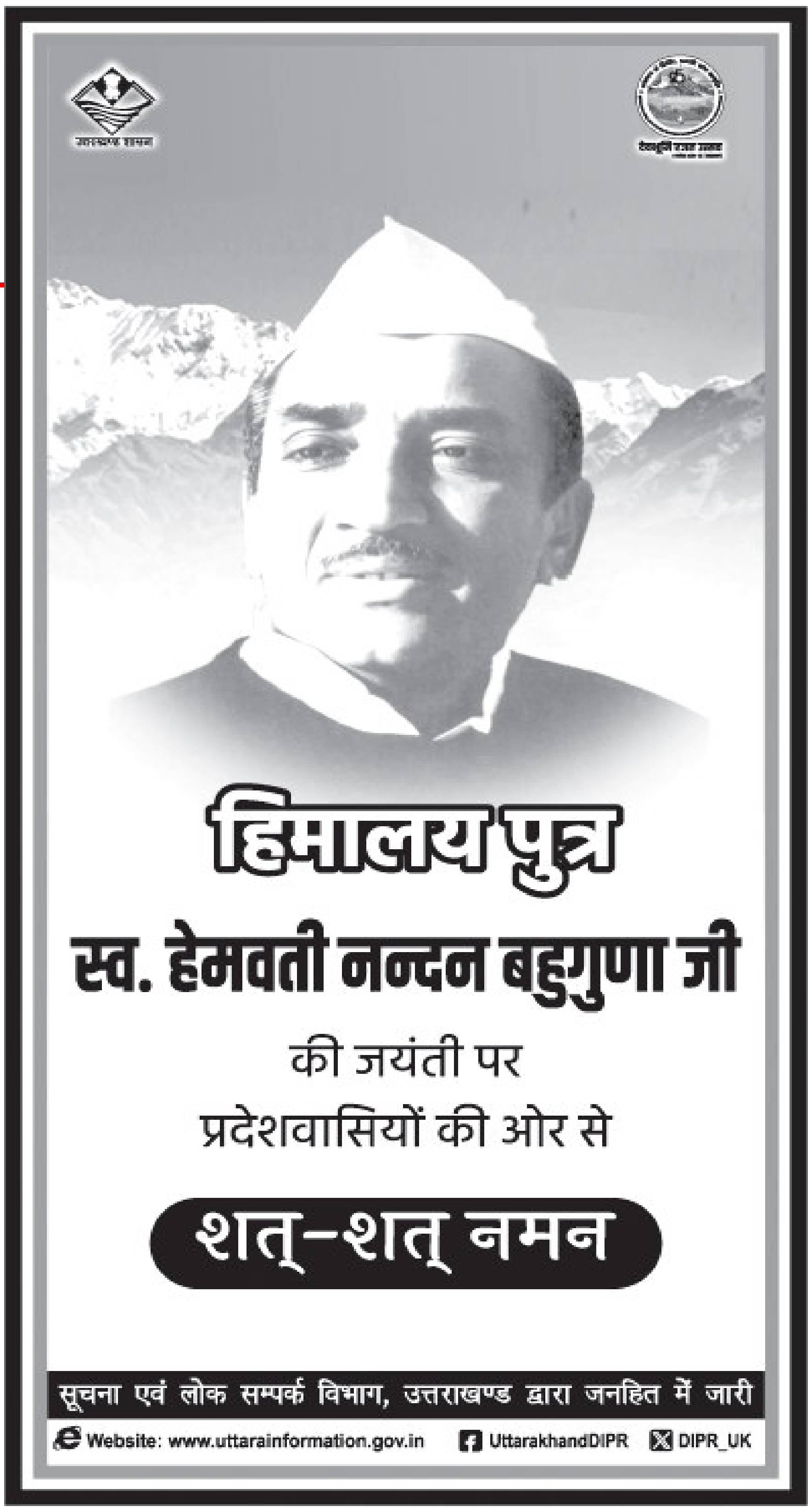

मटका किंग ट्रेलर आउट, जुआ, अमीरी, धोखा और मटके का खेल

प्राइम वीडियो ने अपने आने वाले ओरिजिनल ड्रामा मटका किंग का शानदार ट्रेलर रिलीज कर दिया है. अभय कोरान्ने द्वारा लिखित इस सीरीज को नागराज पोपटराव मंजुले ने बनाया, लिखा और डायरेक्ट किया है. ट्रेलर 1960 के दशक के तेजी से बदलते बॉम्बे की एक दिलचस्प कहानी की झलक दिखाता है, जहां एक महत्वाकांक्षी कपास व्यापारी (कॉटन ट्रेडर) मुश्किलों से लड़ते हुए मटका नाम का एक निडर जुआ साम्राज्य खड़ा करता है और अमीरों के इस शौक को पूरे देश का जुनून बना देता है.

मटका किंग में विजय वर्मा लीड रोल में हैं, साथ ही कृतिका कामरा, सई ताम्हणकर, सिद्धार्थ जाधव, भूपेंद्र जादावत और गुलशन ग्रोवर भी मुख्य भूमिकाओं में नजर आएंगे. इनके अलावा भारत जाधव, गिरीश कुलकर्णी, जेमी लीवर, किशोर कदम, साइरस साहूकार, अर्पिता सेठिया, संभाजी तांगडे, इश्तियाक खान, संजीव जोटांगिया और सिमरन अश्विनी भी अहम रोल निभा रहे हैं. यह सीरीज 17 अप्रैल को भारत और दुनिया भर के 240 देशों और क्षेत्रों में सिर्फ प्राइम वीडियो पर स्ट्रीम होगी. ट्रेलर ब्रिज भट्टी (विजय वर्मा) की मटके से बदलती दुनिया में ले जाता है, जो एक शातिर और होनहार कॉटन ट्रेडर है और 1960 के दशक के आजाद भारत के बॉम्बे में एक बेहतर जिंदगी के सपने देखता है. एक दमदार आइडिया के साथ, वह जुए को अमीरों के शौक से बदलकर कुछ बहुत बड़ा बना देता है और यहीं से जन्म होता है मटका का. लेकिन दांव जितना बड़ा होता है, अंजाम उतना ही खतरनाक होता है, और जो एक सपने के रूप में शुरू हुआ था, वह सब कुछ तबाह भी कर सकता है. तेज रफ्तार और रोंगटे खड़े कर देने वाला यह ट्रेलर जुनून, ताकत और उसकी कीमत की कहानी बयां करता है, जो आपके मन में एक ही सवाल छोड़ जाता है: क्या मटका किंग का सपना पूरा होगा या सब कुछ बिखर जाएगा? 1960 के बॉम्बे को एक नए अंदाज में अनुभव करें, जो सपनों, अरमानों और मटका किंग से भरा है, जिसका प्रीमियर 17 अप्रैल को सिर्फ प्राइम वीडियो पर होगा.

विराज भट्टी का किरदार निभा रहे विजय वर्मा ने बताया, मटका किंग में काम करना एक रोमांचक सफर रहा है. इस दुनिया और इस किरदार को पर्दे पर उतारना चुनौतीपूर्ण भी था और दिल को सुकून देने वाला भी, खासकर एक ऐसे दौर की पृष्ठभूमि में जिसे मैंने पहले कभी एक्सप्लोर नहीं किया था. साथ ही, दहाड़ और मिर्जापुर के बाद फिर से एक प्राइम ओरिजिनल में वापसी करना शानदार है. हमारे क्रिएटर्स नागराज मंजुले और अभय कोरान्ने ने मुझे ब्रिज की दुनिया में गहराई से उतरने की पूरी आज़ादी दी, और कृतिका, सई, गुलशन ग्रोवर जैसे टैलेंटेड को-स्टार्स और पूरी कास्ट के साथ काम करने से यह अनुभव और भी यादगार बन गया. असल में मटका किंग महत्वाकांक्षा, ताकत और कामयाबी के लिए चुकाई जाने वाली कीमत की कहानी है, जो मुझे लगता है कि हर किसी को पसंद आएगी और भारत के साथ-साथ पूरी दुनिया के दर्शकों को बांधे रखेगी. मैं बस उस पल का इंतजार कर रहा हूं, जब अप्रैल को प्राइम वीडियो पर यह सीरीज रिलीज होगी और लोग इसे देखेंगे.

कॉकटेल 2 का नया गाना जब तलक हुआ रिलीज, मस्ती में डूबीं रश्मिका मंदाना और कृति सैनन, शाहिद ने भी जमाया रंग

डायरेक्टर होमी अडजानिया की फिल्म कॉकटेल 2 रिलीज की तैयारी कर रही है और 19 जून को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। आज बुधवार को मेकर्स ने इसका नया गाना जब तलक रिलीज कर दिया है। इस गाने में शाहिद कपूर, कृति सैनन और रश्मिका मंदाना अपने डांस से रंग जमा रहे हैं। इस गाने को अरिजीत सिंह ने अपनी आवाज से सजाया है और इसे प्रीतम चक्रवर्ती ने कंपोज किया है। लिरिक्स अमिताभ भट्टाचार्य ने लिखे हैं और इसे होमी अडजानिया ने डायरेक्ट किया है।

कॉकटेल 2 की रिलीज का दर्शकों को बेसब्री से इंतजार है और बीते दिनों इसकी घोषणा की गई थी। फिल्म कॉकटेल 2 में शाहिद कपूर, रश्मिका मंदाना और कृति सैनन ने जमकर डांस किया है। यूनिवर्सल म्यूजिक यूट्यूब चैनल पर कॉकटेल 2 का रिलीज हो गया है और महज 1 घंटे में ही इसे 1 लाख से ज्यादा व्यूज मिल चुके हैं। फिल्म 19 जून को सिनेमाघरों में दस्तक देने की तैयारी कर रही है। बीते दिनों फिल्म के सेट की तस्वीरें भी सामने आती रही हैं। अब देखना होगा कि क्या ये तिकड़ी बॉक्स ऑफिस पर अपना असर छोड़ने में सफल रहती है या नहीं।

बता दें कि डायरेक्टर होमी अडजानिया ने साल 2012 में फिल्म कॉकटेल बनाई थी। इसमें सैफ अली खान, दीपिका पादुकोण और डायना पेंटी ने लीड रोल निभाया था। इसके साथ ही बमन इरानी और डिंपल कपाड़िया ने भी अहम किरदारों में अपनी एक्टिंग का समां बांधा था। कहानी लवट्रांयगल की थी। फिल्म में गौतम कपूर (सैफ अली खान) को विरोनिका (दीपिका पादुकोण) से प्यार है। विरोनिका बोल्ड और बिंदास लड़की है जो अपनी जिंदगी को खुलकर जीती थी।

इसके साथ ही इन दोनों की मुलाकात मीरा सेठी (डायना पेंटी) से होती है जो एक एनआरआई से शादी करके विदेश में जाती है। लेकिन उसका पति उसे बीच मंजधार में छोड़ देता है और तीनों की दोस्ती हो जाती है। तीनों की ये दोस्ती अंत में लव ट्रांयगल में फिट हो जाती है और कहानी मजा देने लगता है। ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर भी हिट रही थी। अब देखना होगा कि क्या कॉकटेल 2 भी दर्शकों को अपना दीवाना बना पाती है या नहीं।

गिन्नी वेड्स सनी 2 के ट्रेलर पर आया अपडेट, इस दिन दिखेगी अविनाश-मेधा की प्रेम-कहानी

यामी गौतम और विक्रांत मैसी की फिल्म गिन्नी वेड्स सनी (2020) को दर्शकों ने खूब पसंद किया था। निर्देशक प्रशांत झा अब इसका सीक्वल गिन्नी वेड्स सनी 2 लेकर आ रहे हैं जो सोशल मीडिया पर चर्चा बटोर रही है। अविनाश तिवारी इसमें मुख्य किरदार निभा रहे हैं। उनके साथ 12वीं फेल वालीं अभिनेत्री मेधा शंकर नजर आएंगी। इस फिल्म का निर्माण निर्माण विनोद बच्चन और उमेश कुमार बंसल ने मिलकर किया है। जी स्टूडियो ने गिन्नी वेड्स सनी 2 का पोस्टर जारी करते हुए ट्रेलर रिलीज की तारीख बताई है। उन्होंने लिखा, मंडप सेट है, बारात तैयार है। अब प्यार और परिवार के साथ बस एक बवाल ट्रेलर का इंतजार है। पोस्ट के मुताबिक, गिन्नी वेड्स सनी 2 का ट्रेलर आज रिलीज किया जाएगा। लिलेट दुबे, सुधीर पांडे, गोविंद नामदेव, गोपी भल्ला और रोहित चौधरी जैसे कलाकार भी फिल्म में शामिल हैं।

कॉमेडियन जाकिर खान पर भड़कीं अमीषा पटेल? बोलीं- नकारात्मकता मत फैलाओ

अमीषा पटेल काम के साथ-साथ अपनी बेबाक राय रखने के लिए भी जानी जाती हैं। हाल ही में, अभिनेत्री ने एक सोशल मीडिया पर एक पोस्ट साझा करते हुए जाकिर खान की आलोचना की है। उन्होंने कॉमेडियन पर नकारात्मकता फैलाने का आरोप लगाते हुए कहा कि फिल्म जगत ने धुरंधर की सफलता को खुले दिल से स्वीकार किया है। दरअसल, एक कार्यक्रम में जाकिर ने फिल्मी सितारों पर तंज कसते हुए कहा था कि धुरंधर से सबको जलन हुई है। अमीषा ने कार्यक्रम से जाकिर की एक तस्वीर साझा करते हुए लिखा, यार, नकारात्मकता फैलाना बंद करो! फिल्म इंडस्ट्री ने धुरंधर को महत्व दिया है और उसका सम्मान किया है! शाहरुख, सलमान, सनी, रितिक, अजय जैसे सुपरस्टारों ने सिर्फ 1 नहीं बल्कि 25 से अधिक मेगा हिट दिए हैं और आगे भी ऐसा करते रहेंगे। शांत रहो, गदर बहुत सालों से सबने पहले ही मचा दिया है, और आगे भी मचाएंगे। चेतक स्क्रीन अवार्ड 2026 की शाम, जाकिर ने मंच से मजाकिया अंदाज में कहा था, कितने ही बधाई संदेश डाल दें, कितनी ही कहानियां डाल दें, कितने ही इंटरव्यू में बोल दें मेरी पसंदीदा फिल्म, मगर सच तो यह है कि धुरंधर से सबकी जलन तो है। उन्होंने शायराना अंदाज में बोला था, बम फिल्म में फूटें त्यारी में, पर धुआं उड़ा है बांद्रा से जुहू में। उनके इस मजाकिया कथन पर वहां मौजूद फिल्मी सितारे भी हंस पड़े थे।

कानों से जुड़ी इन 5 गलत धारणाओं को सच मानते हैं लोग, जानिए सच्चाई

कान हमारे शरीर का एक जरूरी हिस्सा हैं और इनकी देखभाल करना बहुत अहम है। हालांकि, कानों से जुड़ी कई गलत धारणाएं हैं, जिन्हें लोग सच मानकर अपनी सेहत को नुकसान पहुंचा लेते हैं। इन गलत धारणाओं में से कुछ तो इतनी आम हैं कि लोग इन्हें बार-बार सुनते हैं और बिना सोचे-समझे अपनाते भी हैं। आइए आज हम आपको कानों से जुड़ी ऐसी ही कुछ गलत धारणाओं और उनकी सच्चाई के बारे में बताते हैं।

क्या कानों में झांकना खतरनाक होता है?

कई लोगों का मानना है कि किसी के कान में झांकना खतरनाक हो सकता है। हालांकि, सच्चाई यह है कि अगर कान साफ हो और कान के पर्दे पर जोर से न झांका जाए तो कान में झांकने से कोई नुकसान नहीं होता। इसके अलावा कानों में झांकने से कान की गहराई तक पहुंचना मुश्किल होता है, इसलिए कानों में झांकने से कोई नुकसान नहीं होता।

क्या कान में रूई लगाना जरूरी होता है?

अक्सर लोग यह मानते हैं कि कान में रूई लगाना जरूरी होता है, खासकर जब बारिश हो या तैराकी के बाद। हालांकि, ऐसा करना गलत है क्योंकि इससे कान में नमी फंस सकती है और संक्रमण का खतरा बढ़ सकता है। बेहतर होगा कि बारिश के बाद या तैराकी के बाद कान को अच्छे से पोंछ लें ताकि नमी न रहे और संक्रमण का खतरा भी कम हो जाए।

क्या कान में मोम होना बुरा संकेत है?

यह भी एक आम धारणा है कि कान में मोम होना बुरा संकेत है। असल में कान में मोम होना एक सामान्य प्रक्रिया है और यह कान को संक्रमण से बचाने में मदद करता है। अगर मोम बहुत अधिक हो या गाढ़ा हो तो डॉक्टर से जांच कराएं ताकि कोई समस्या न हो। अपने कान को साफ रखने के लिए कभी भी किसी भी तरह के घरेलू उपाय अपनाने की बजाय डॉक्टर की सलाह लें।

क्या कान में दर्द होना हमेशा संक्रमण का संकेत होता है?

यह भी एक आम धारणा है कि कान में दर्द होना हमेशा संक्रमण का संकेत होता है। असल में कान में दर्द कई कारणों से हो सकता है, जैसे कि दांतों की समस्या, साइनस संक्रमण या हवा के दबाव में बदलाव। इसलिए जब भी आपके कान में दर्द हो तो डॉक्टर से संपर्क करें ताकि सही कारण पता चल सके और उचित इलाज मिल सके। सही जानकारी और समय पर इलाज लेने से समस्या जल्दी ठीक हो सकती है।

क्या कान में हेयरपिन डालने से कान में मोम निकलता है?

यह भी एक आम धारणा है कि कान में हेयरपिन डालने से कान में मोम निकलता है। हालांकि, ऐसा करना खतरनाक हो सकता है क्योंकि इससे कान के पर्दे को नुकसान पहुंच सकता है या कान की गहराई तक पहुंच कर चोट लग सकती है। इसलिए कभी भी इस तरह के घरेलू उपाय अपनाने की बजाय डॉक्टर की सलाह लें और कान की सफाई के लिए सुरक्षित तरीके अपनाएं।

होंठों की देखभाल करते समय न करें ये 5 गलतियां, होंठ लगेंगे खूबसूरत

होंठों की देखभाल करना बहुत जरूरी है क्योंकि ये चेहरे की सुंदरता में अहम भूमिका निभाते हैं। हालांकि, कई लोग होंठों की देखभाल करते समय अनजाने में कुछ गलतियां कर देते हैं, जिससे उनके होंठ स्वस्थ नहीं रह पाते। इस लेख में हम कुछ ऐसी ही गलतियों के बारे में जानेंगे, जिन्हें हमें करने से बचना चाहिए ताकि हमारे होंठ हमेशा सुंदर और स्वस्थ रहें।

सही लिप बाम का चयन न करना

लिप बाम का चयन करते समय कई लोग सिर्फ खुशबू या रंग देखकर ही चुन लेते हैं, जो कि गलत है। आपको ऐसा लिप बाम चुनना चाहिए, जिसमें प्राकृतिक तत्व हों जैसे कि नारियल का तेल, बादाम का तेल या शिया बटर। ये तत्व आपके होंठों को गहराई से पोषण देते हैं और उन्हें सूखने से बचाते हैं। इसके अलावा सूरज की किरणों से बचाने वाला लिप बाम भी जरूरी है ताकि होंठ सूरज की किरणों से सुरक्षित रहें।

पानी की कमी पर ध्यान न देना

पानी की कमी से हमारा शरीर ही नहीं बल्कि हमारे होंठ भी प्रभावित होते हैं। जब शरीर में पानी की कमी होती है तो होंठ सूखे और फटे हुए दिखते हैं। इसलिए दिनभर में पर्याप्त मात्रा में पानी पीना बहुत जरूरी है। इसके अलावा तरबूज, खीरा जैसे पानी से भरपूर फलों का सेवन भी करें। इससे न केवल आपकी सेहत बेहतर होगी बल्कि आपके होंठ भी स्वस्थ रहेंगे।

रात को लिप बाम न लगाना

रात को सोने से पहले अगर आप अपने होंठों पर लिप बाम लगाते हैं तो यह आपकी आदत बननी चाहिए। सोते समय आपके होंठ लंबे समय तक लिप बाम के संपर्क में रहते हैं, जिससे वे सुबह उठकर ताजगी महसूस करते हैं और फटे नहीं दिखते। इसलिए रात को सोने से पहले हमेशा अपने होंठों पर लिप बाम लगाएं ताकि वे नमी बनाए रखें और स्वस्थ रहें।

स्क्रब न करना

जैसे चेहरे की मृत त्वचा हटाना जरूरी होता है, वैसे ही होंठों की मृत त्वचा हटाना भी जरूरी होता है। अगर आप ऐसा नहीं करते तो होंठ रूखे और फटे दिखते हैं। आप घर पर ही शक्कर और शहद का मिश्रण बनाकर इसका उपयोग कर सकते हैं। इससे आपके होंठ मुलायम होंगे और उनकी प्राकृतिक रंगत भी वापस आएगी। नियमित रूप से यह प्रक्रिया करने से आपके होंठ स्वस्थ और आकर्षक दिखेंगे।

बिना सुरक्षा के धूप में निकलना

धूप में बिना लिप बाम लगाए बाहर निकलना भी एक बड़ी गलती हो सकती है क्योंकि सूरज की किरणें आपके होंठों को नुकसान पहुंचा सकती हैं। इसलिए जब भी आप घर से बाहर जाएं तो अपने होंठों पर सूरज से बचाने वाला लिप बाम जरूर लगाएं ताकि वे सूरज की किरणों से सुरक्षित रहें। इन छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखकर आप अपने होंठों को हमेशा सुंदर और स्वस्थ रख सकते हैं।

सेहत के लिए फायेदमंद के साथ नुकसानदायक है पनीर

पनीर ऐसी खाद्य सामग्री है जिसने आम तौर पर बहुतायत में खाया जाता है। विशेष रूप से शादी पार्टियों में पनीर की विभिन्न प्रकार की सब्जियाँ बनाई जाती हैं जिन्हें बड़े चाव के साथ लोग खाते हैं। पनीर की सब्जियों के साथ-साथ आजकल पनीर टिक्का, पनीर पकौड़े भी खासे प्रचलन में हैं। बाजार में कई ऐसे आउटलेट्स देखने को मिल जाते हैं जहाँ शाम के वक्त लोगों की भीड़ इन खाद्य पदार्थों को खाती नजर आती है।

पनीर के सेवन से सेहत को कई फायदे होते हैं। पनीर में बहुतायत में प्रोटीन पाया जाता है, लेकिन क्या आप जानते हैं, इसके जितने फायदे हैं उतने नुकसान भी हैं, जी हां, यदि पनीर का सेवन ज्यादा मात्रा में किया जाए तो इससे सेहत को नुकसान भी हो सकता है। आज का हमारा लेख इसी विषय पर है।

पनीर के सेवन के नुकसान

1. जिन लोगों को हाई ब्लड प्रेशर की समस्या है वे पनीर के सेवन से परहेज करें, वरना इससे समस्या और बढ़ सकती है।

2. जिन लोगों को पेट की समस्या है या जो लोग कब्ज, एसिडिटी आदि की समस्या से परेशान हैं वे डाइजेस्टिव सिस्टम को सुरक्षित रखने के लिए अपनी डाइट में पनीर को बिलकुल शामिल न करें। पनीर को लेकर कहा जाता है कि यह पेट में गलने में तीन दिन का समय लेता है। इसके सेवन से कब्ज, एसिडिटी की परेशानियाँ बढ़ जाती हैं।

3. जिन लोगों को फूड पॉइजिनंग की समस्या है वे भी पनीर का सेवन करने से बचें क्योंकि इसमें भरपूर मात्रा में प्रोटीन होता है ऐसे में इससे समस्या और बढ़ सकती है।

4. यदि पनीर का अधिक मात्रा में सेवन किया जाए तो इससे मितली, सिरदर्द, भूख में कमी आदि की समस्या हो सकती है।

5. अधिक पनीर के सेवन से सिर दर्द और माइग्रेन की समस्या हो सकते हैं।

6. गर्भवती महिलाओं को पनीर का सेवन नहीं करना चाहिए। यह पेट में गैस की समस्या पैदा करता है। गर्भवती महिलाओं को डॉक्टर की सलाह पर ही पनीर का सेवन करना चाहिए।

आलेख में दी गई जानकारियों को लेकर हम यह दावा नहीं करते कि यह पूर्णतया सत्य एवं सटीक हैं। इन्हें अपनाने से पहले संबंधित क्षेत्र के विशेषज्ञ की सलाह जरूर लें।

अगर आप भी रोजाना लगाती हैं लिपस्टिक, तो आज ही जानें इसके नुकसान

इन दिनों स्कूल से लेकर ऑफिस जाने वाली हर महिला लिपस्टिक का इस्तेमाल करती है. लिपस्टिक में अलग अलग रंग मौजूद होते है. वहीं काफी सारी लड़कियां तो लिपस्टिक का इस्तेमाल अपने कपड़े के रंग के साथ मैच करती है. इन दिनों लड़कियां बिना लिपस्टिक के तो घर से बाहर जाने के बारे में सोच ही नहीं सकती है. वहीं काफी सारी महिलाओं का पहला प्यार लिपस्टिक होती है. लेकिन क्या आप जानते है कि अगर आप रोजाना लिपस्टिक का इस्तेमाल करती है, तो ये आपके लिए कितना ज्यादा खतरनाक साबित हो सकता है. आइए आपको इसके नुकसान के बारे में बताते है.

होंठों का नेचुरल रंग खराब

हमेशा लिपस्टिक लगाए रखने से होंठों का जो नेचुरल रंग होत है वो काफी ज्यादा प्रभावित होता है. इसका जो कारण है वो है लिपस्टिक में अलग अलग टाइप के केमिकल्स होते है. जो कि होठों के नेचुरल रंग को काफी ज्यादा प्रभावित करता है.

होंठों में रूखापन

अगर आप रोजाना लिपस्टिक का इस्तेमाल करती हैं, तो इससे आपके होंठों में रूखापन आ जाता है. वहीं लिपस्टिक में मौजूद जो केमिकल्स होते है. उसकी वजह से होंठों की जो नमी होती है, वो चली जाती है और आपके होंठ सूख जाते है और फट जाते हैं.

क्वालिटी का ध्यान रखें

आप जब भी लिपस्टिक लगाएं तो कोशिश करें कि आप हमेशा बेस्ट क्वालिटी की लिपस्टिक ही लगाएं. अगर आप अच्छी क्वालिटी की लिपस्टिक नहीं लगाएंगे तो इससे आपको एलर्जी भी हो सकती है.

संस्कृत को बढ़ावा देने के लिए रोजगार से जोड़ना आवश्यक: त्रिवेंद्र रावत

हरिद्वार ,संवाददाता । उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय के 21वें स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि हरिद्वार सांसद त्रिवेंद्र सिंह रावत ने संस्कृत भाषा के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि संस्कृत केवल परंपराओं और धार्मिक अनुष्ठानों की भाषा नहीं, बल्कि ज्ञान-विज्ञान की मूल आधारशिला है। संस्कृत को बढ़ावा देने के लिए इसे रोजगार से जोड़ना आवश्यक है। जब तक भाषा आजीविका से नहीं जुड़ेगी, तब तक उसका व्यापक प्रसार संभव नहीं है। उन्होंने युवाओं से संस्कृत के अध्ययन और उसके आधुनिक उपयोगों पर ध्यान देने का आह्वान किया। सांसद ने उदाहरण देते हुए कहा कि दुनिया के कई विद्वान संस्कृत को आधुनिक तकनीक, खासकर क्वांटम कंप्यूटिंग के लिए उपयुक्त मानते हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि अपनी भाषा और संस्कृति से जुड़ाव ही किसी समाज और राष्ट्र को मजबूत बनाता है। समारोह में कैबिनेट मंत्री मदन कौशिक ने संस्कृत के संवर्धन को राज्य की प्राथमिकता बताया। उन्होंने कहा कि देवभूमि की पहचान को मजबूत करने के लिए संस्कृत को जन-जन तक पहुंचाना आवश्यक है। उन्होंने हरिद्वार और ऋषिकेश को संस्कृत नगरी के रूप में विकसित करने की योजना पर जोर देते हुए कहा कि ई-रिक्शा चालकों, होटल कर्मियों और अन्य सेवा क्षेत्र से जुड़े लोगों को संस्कृत के सामान्य शब्दों का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इस अवसर पर रानीपुर विधायक आदेश चौहान ने विचार रखें। विश्वविद्यालय के कुलसचिव दिनेश कुमार राणा ने अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन डॉ. कंचन तिवारी ने किया। इस अवसर पर प्रो. आरएन यादव, प्रो. दिनेश चंद्र चमोला, प्रो. मोहन चंद्र बलोदी, प्रो. मनोज किशोर पंत, प्रो. लक्ष्मी नारायण जोशी, प्रो. बिंदुमती द्विवेदी, प्रो, अरविंद नारायण मिश्रा, डॉ. उमेश कुमार शुक्ला आदि मौजूद रहे।

विवि में कर्मकांड और 'श्रीमद्भागवत सहित कई नए पाठ्यक्रम शुरू होंगे : कुलपति

विवि के कुलपति प्रो. रमाकांत पांडे ने संस्कृत के व्यापक प्रसार पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि स्थापना दिवस समारोह को अगले वर्ष से तीन दिन तक आयोजित कर इसे प्रदेशव्यापी स्वरूप दिया जाएगा। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय और संस्कृत भारती के सहयोग से जून में 21 दिवसीय संभाषण शिविर आयोजित करने की योजना है। साथ ही जुलाई से योग, कर्मकांड और 'श्रीमद्भागवत' पर पीजी डिप्लोमा सहित कई नए पाठ्यक्रम शुरू किए जाएंगे, जिन्हें ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों में संचालित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि छात्राओं के लिए नया हॉस्टल शीघ्र तैयार होगा और अखिल भारतीय स्तर पर विद्यार्थियों को आमंत्रित किया जाएगा।

उद्योग लगाने के नाम पर महिला से 1.44 करोड़ की ठगी, चार पर केस दर्ज

हरिद्वार । सिडकुल क्षेत्र में उद्योग स्थापित करने के लिए जमीन खरीदने वाली महिला ने जमीन विक्रेता दंपति और दो प्रॉपर्टी डीलरों पर 1.44 करोड़ रुपये की ठगी का आरोप लगाया है। शिकायत पर पुलिस ने सिडकुल थाने में केस दर्ज कर लिया है। शिकायतकर्ता राजरानी पत्नी विनीत कुमार, हाल निवासी कृष्णा गार्डन सोसायटी कनखल ने पुलिस को बताया कि वह मूल रूप से बल्लभगढ़ जिला फरीदाबाद हरियाणा की रहने वाली हैं। सिडकुल हरिद्वार औद्योगिक क्षेत्र में भूमि खरीदकर उद्योग स्थापित करना चाहती थीं। इसी दौरान उनका संपर्क प्रॉपर्टी डीलर रतन कुमार पांडे और आसीमा से हुआ। आरोप है कि दोनों ने उनकी मुलाकात मानसी विरमानी और उसके पति आशीष विरमानी निवासी आवास विकास मॉडल कॉलोनी रानीपुर मोड़, हरिद्वार से कराई। दंपति ने ग्राम सलेमपुर महदूद में भूमि दिखाते हुए दावा किया कि वह इसके संक्रमणीय भूमिधर हैं और भूमि का भू-उपयोग औद्योगिक श्रेणी में परिवर्तित है। पीड़िता के अनुसार आरोपियों के भरोसे में आकर उन्होंने 2008 वर्गमीटर भूमि एक करोड़ 24 लाख रुपये में खरीद ली। आरोप है कि भूमि का बैनामा 4 अप्रैल 2022 को सब रजिस्ट्रार कार्यालय हरिद्वार में पंजीकृत कराया गया। बाद में जब उन्होंने औद्योगिक इकाई स्थापित करने के लिए दाखिल-खारिज और राजस्व अभिलेखों की जांच कराई तो पता चला कि भू-उपयोग परिवर्तन आदेश इस शर्त पर हुआ था कि केवल मानसी विरमानी ही इस भूमि का उपयोग कर सकती हैं। पीड़िता ने आरोप लगाया कि यह जानकारी होने के बावजूद मानसी विरमानी, आशीष विरमानी, रतन कुमार पांडे और आसीमा ने मिलकर उनसे 1.24 करोड़ रुपये और कमीशन व अन्य खर्चों के नाम पर 20 लाख रुपये ठग लिए। उन्होंने बताया कि भूमि की पैमाइश कराने पर यह भी सामने आया कि जिस जमीन पर कब्जा दिया गया, उसमें करीब आधी भूमि ग्राम समाज के नाले की निकली। इस प्रकार आरोपियों ने धोखाधड़ी के साथ फर्जीवाड़ा भी किया। एसओ अजय शाह ने बताया कि आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

रानीपुर पुलिस ने 6.75 ग्राम स्मैक के साथ तस्कर को किया गिरफ्तार

हरिद्वार । रानीपुर कोतवाली पुलिस ने जमालपुर खुर्द मार्ग से 6.75 ग्राम स्मैक के साथ युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पुलिस के अनुसार सोमवार देर रात नहर पटरी से जमालपुर खुर्द जाने वाले कच्चे रास्ते पर संदिग्ध व्यक्ति दिखाई दिया। पुलिस को देखकर वह घबरा गया और पीछे मुड़कर भागने लगा। शक होने पर पीछा कर उसे दबोच लिया गया। तलाशी के दौरान उसके पास से स्मैक बरामद हुई। पूछताछ में आरोपी ने अपना नाम आबिद हुसैन निवासी दादूपुर गोविंदपुर, कोतवाली रानीपुर हरिद्वार बताया। उसने पुलिस को बताया कि उसने स्मैक एक दिन पहले सलेमपुर क्षेत्र के बाहर एक टैक्सी चालक से खरीदी थी।

आपदा का कारण न बनें विकास कार्य: असवाल

देहरादून,संवाददाता । राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य डॉ. दिनेश कुमार असवाल ने कहा कि आपदाओं में जीरो डेथ का लक्ष्य तभी हासिल किया जा सकता है, जब जोखिम के प्रभाव को न्यूनतम किया जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि विकास आवश्यक है, लेकिन यह सुनिश्चित करना भी उतना ही जरूरी है कि विकास कार्य किसी नई आपदा का कारण न बनें। मंगलवार को यूएसडीएमए में आयोजित उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक में डॉ. असवाल ने आपदा प्रबंधन विभाग एवं राज्य के सभी 13 जनपदों की तैयारियों का व्यापक आकलन किया। उन्होंने जनपदों की क्षमताओं का परीक्षण करते हुए तैयारियों पर संतोष व्यक्त किया, साथ ही निर्देश दिए कि आपदा प्रबंधन के तहत आपदा जोखिम न्यूनीकरण को केंद्र में रखते हुए कार्य किया जाए तथा आपदा पूर्व तैयारी, जोखिम पहचान और न्यूनीकरण उपायों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए। उन्होंने एसडीएमपी और डीडीएमपी की सराहना करते हुए कहा कि उत्तराखण्ड में आपदा जोखिम न्यूनीकरण में यह मील का पत्थर साबित होंगे।

उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड में लैंडस्लाइड अर्ली वार्निंग सिस्टम का विकास समय की आवश्यकता है। उन्होंने इसके लिए एनडीएमए स्तर पर हर संभव तकनीकी एवं संस्थागत सहयोग का भरोसा दिलाया। डॉ. असवाल ने राज्य के सभी जनपदों में मोबाइल कनेक्टिविटी के लिहाज से शैडो एरिया को चिन्हित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इन क्षेत्रों की सूची एनडीएमए को भेजी जाए। इन क्षेत्रों में संचार सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए एनडीएमए टेलीकॉम सेवा प्रदाताओं को आवश्यक दिशा-निर्देश देगा।

बैठक के दौरान सचिव विनोद कुमार सुमन ने नदियों के चैनलाइजेशन के लिए ड्रेजिंग कार्यों हेतु एसडीआरएफ फंड में छूट प्रदान किए जाने का अनुरोध किया। इस पर डॉ. असवाल ने कहा कि राज्य सरकार प्रस्ताव प्रस्तुत करे, जिसे एनडीएमए स्तर पर प्राथमिकता के साथ विचार कर आवश्यक छूट दिलाने का प्रयास किया जाएगा। इसके साथ ही आपदा जोखिम न्यूनीकरण कार्यों के लिए अतिरिक्त वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने के अनुरोध पर भी उन्होंने सकारात्मक आश्वासन दिया।युवा आपदा मित्र योजना की समीक्षा करते हुए उन्होंने सामुदायिक सशक्तीकरण को आपदा प्रबंधन की सबसे मजबूत कड़ी बताया और अधिक से अधिक लोगों को प्रशिक्षण से जोड़ने पर जोर दिया। इसके साथ ही उन्होंने निर्देश दिए कि उपकरणों, मानव संसाधनों, संवेदनशील क्षेत्रों एवं गांवों की विस्तृत जीआईएस मैपिंग कर उन्हें जिला आपदा प्रबंधन योजना में शामिल किया जाए।

उन्होंने राज्य के सभी सरकारी एवं निजी स्कूलों, कॉलेजों, अस्पतालों, मॉल, अपार्टमेंट एवं स्टेडियम के लिए आपदा प्रबंधन योजना की अनिवार्यता पर बल दिया। इस संबंध में सचिव आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास विनोद कुमार सुमन ने अवगत कराया कि रेखीय विभागों के प्लान तैयार किए जा चुके हैं तथा अन्य संस्थानों के प्लान तैयार करने की प्रक्रिया तेजी से प्रगति पर है।डॉ. असवाल ने सभी जिलाधिकारियों को निर्देशित किया कि वे प्रत्येक माह कम से कम एक बार सेना, वायु सेना, एसएसबी, बीएसएफ, एनडीआरएफ एवं अन्य अर्द्धसैनिक बलों के साथ समन्वय बैठक अवश्य करें, ताकि आपदा के समय त्वरित एवं प्रभावी प्रतिक्रिया सुनिश्चित की जा सके। बैठक में सचिव खाद्य श्री आनंद स्वरूप, एसीईओ प्रशासन श्री महावीर सिंह चौहान, एसीईओ क्रियान्वयन डीआईजी राजकुमार नेगी, जेसीईओ मो0 ओबैदुल्लाह अंसारी, यूएलएमएमसी के निदेशक डॉ. शांतनु सरकार आदि उपस्थित रहे।राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य डॉ. दिनेश कुमार असवाल ने कहा कि उत्तराखण्ड में वनाग्नि की घटनाओं का एक प्रमुख कारण पिरूल है, जिसे यदि सही तरीके से उपयोग में लाया जाए तो यह समस्या के बजाय एक उपयोगी संसाधन बन सकता है। उन्होंने बताया कि पिरूल से ब्रिकेट (ईंधन के ठोस ब्लॉक) बनाने की पहल को बढ़ावा देने के लिए एनडीएमए बड़े स्तर पर फंडिंग करने के लिए भी तैयार है। इस दिशा में उन्होंने सभी जनपदों से प्रस्ताव तैयार कर एनडीएमए को भेजने को कहा। डॉ. असवाल ने यह भी सुझाव दिया कि पिरूल के प्रभावी और बड़े पैमाने पर एकत्रीकरण के लिए आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जाए। उन्होंने विशेष रूप से रोबोटिक्स जैसी अत्याधुनिक तकनीक अपनाने पर जोर दिया, जिससे कार्य अधिक तेज, सुरक्षित और दक्ष तरीके से किया जा सके।

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य डॉ. दिनेश कुमार असवाल ने कहा कि उत्तराखण्ड के अत्यधिक संवेदनशील गांवों से लोगों का चरणबद्ध विस्थापन सुरक्षित स्थानों पर नए गांव और कस्बे बसाकर किया जाए। उन्होंने हर जिले में एक मॉडल गांव/कस्बा बसाने का सुझाव दिया जो हर प्रकार की आपदा के लिहाज से पूर्णतः सुरक्षित हो।

स्वामी,मुद्रक व प्रकाशक अवनीश कुमार द्वारा भगवती प्रिंटर्स,इण्डस्ट्रियल एरिया, हरिद्वार से छपवाकर ग्रा. बसवाखेड़ी पो. मंगलौर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित किया।
सम्पादकः अवनीश कुमार, मो० 9410553400
ई-मेल: liveskgnews@gmail.com
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र हरिद्वार न्यायालय में ही होगा)
सभी लेखों में सम्पादक की सहमति जरूरी नही है।